SAANS SAANS MAIN

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. हरि की लीला हरि ही जाने। 1

2. रामा तेरी धुन प्यारी। 1

3. जो इतने क्रूर हुए मुझ पर। 2

4. जलता रहा सदा जीवन भर। 2

5. गीत कितने ही लिखे। 3

6. मेरे राम सुन कृपा निधान। 3

7. भूल जा मन भूल जा सब। 4

8. ईश हमारी तुम सुन लो। 4

9. सागर की लहरों में बहते। 5

10. बसे रहो मेरे नयनों में। 5

11. बिन हरि चैन नहीं पाये मन। 6

12. प्राण पुकारते तुमको राम। 6

13. हरि राखो तुम लाज हमारी। 7

14. क्या ठीक कहें क्या गलत कहें। 7

15. तुम न कहते हम भजे हैं। 8

16. भज ले राम भज ले राम। 8

17. समझ हमें दे जपें तुझे हम। 9

18. चाहत यहाँ बनती क्या। 9

19. कहन सुनन को कुछ न लगता। 10

20. दीनबन्धु तुम सुख के कर्ता। 10

21. तुझे हम खोजते फिरते। 11

22. तेरे गीतों को गाऊँ। 11

23. जीवन रखता है आशाएँ 12

24. कण-कण में हरि तू बसा। 12

25. तुझ चरराा में आ पड़ा हूँ। 1326. चाह मुक्ति की क्यों बन्धन हैं। 13

27. मन गाये क्यों, मन गायें क्यों। 14

28. हाय विवशता कैसी यह हैं। 15

29. अश्रु तेरी ही अमानत। 16

30. कहने को कुछ भी नहीं यहाँ। 17

31. किसको समझाना है हम को। 18

32. हे ईश तुम बन्शी बजा दो। 19

33. तुझे मिला न मेरे ईश्वर। 20

34. दो बूंद प्रेम की पा न सके। 21

35. जय हो रामा जय हो रामा। 22

36. अंधियारे में ज्योति जला दो। 23

37. जय हो जय हो प्रभु जी तेरी। 24

38. तुझ चरणों को छू लेने दे। 25

39. किस अंधियारे में सब डूबा। 26

40. जय श्री राम जय श्री राम। 27

41. पूछते है नीर मेरे। 28

42. जग के दुखड़े रो लेते हैं। 29

43. आओ ना तुम मेरे प्रियतम। 30

44. हरि तुम मुझ से काहे बिसरे। 31

45. दीनों के रक्षक हो तुम तो। 31

46. सुलगता रहा जीवन भर मैं। 32

47. गाऊँ मिलन के गीत मैं कैसे। 33

48. खोज क्या हम बाबलो की। 34

49. पीव पुकार हुआ मन पागल। 35

50. अर्चना भंजित हुई क्यों। 3651. तेरा विरह जगत में चाहूँ। 37

52. सुपनों से सजी हुई दुनियाँ। 37

53. दो नैनन में तुम बस जाओ। 38

54. हरि भज हरिभज हरिभज तू मन। 39

55. कभी हँसाते कभी रूलाते। 39

56. हूँ भिखमंगा दूँ क्या किसको। 40

57. मन में टीस लिये यह फिरता। 41

58. रूठ गई है मुझ से खुशियां। 41

59. मिलते सब और बिछुड़ जाते। 42

60. क्या मन्नत तुम से हम माँगे। 43

61. सुने नहीं तेरी पीड़ा को। 43

62. मेरे गीतों को सुन कर यदि। 44

63. चल के मंजिल मैं पकड़ता। 45

64. प्रकृति यहाँ पर खेल खिलाती। 45

65. मृत्यृ आलिंगन करेगी। 46

66. अंखियाँ रोये कैसे रोकूँ। 46

67. किस की मुझ को याद सताये। 47

68. देखता हूँ पार नभ के। 47

69. हे ईश कृपा करना हम पर। 48

70. थक गये हम चलते-चलते। 49

71. जग यहाँ सब छोड़ जाते। 49

72. झर झर नीर गिरातीं अँखियाँ। 50

73. जियरा तुम बिन भटक रहा है। 50

74. चल मन उड़ चल पार गगन के। 51

75. कितने रस्तों से गुजर गुजर। 5176. आँखों के नीर बरसने दो। 52

77. दुख जग का न कोई सताये। 53

78. मन उड़ता कहिं ठौर न पावे। 54

79. चल चल कर हम तो हार गये। 54

80. हरि से मिलाओ हमें। 55

81. तुम हमको मिले नहीं प्रियतम। 56

82. आ गई मंजिल मेरी अब। 56

83. ओम निरन्जन ओम निरन्जन। 57

84. तेरे संग संजोई आशा। 57

85. तन्हाई में पड़ा अकेला। 58

86. कैसे गाऊँ मैं गीतों को। 58

87. आओ तुम कृपा करो प्रभु। 59

88. तक तक आँखें यह हार गई। 59

89. मेरे चाहे क्या होय है। 60

90. कोई सोवे कोई जागे। 60

91. जब सूख गया निज का ही रस 61

92. जीवन में एक सहारा ले। 61

93. तेरी कृपा बिन ईश्वर। 62

94. बीते यह पल हर दम तुम में। 62

95. प्रभु शरण तेरी हम आये। 63

96. कितना दर्द छिपा है जग में। 63

97. आँसू गिरते झर झर मेरे। 64

98. वियवान में तुम कहाँ छिप गये हो। 64

99. राम मिला दे राम मिला दे। 65

100. टप टप गिरते आँसू खोजें। 65

101. तेरी चौखठ पर पड़े हैं। 66

1

हरि की लीला हरि ही जाने, मैं को छोड़ यहां दीवाने।

बहता जा तू जलधा बीच में, प्रीति इसी से कर दीवाने।

पकड़ सके ना इन लहरों को, बही जा रही निज सुपनों में।

सुपने टूटे मैं जब छूटे, बहो नहीं कुछ अपने वश में।

पल दो पल का मेल यहां है, जाते पल बिछुड़े न पता है।

प्यार करो बस इसी जलधा से, सबके अन्तस यही वसा है।

सुमर इसी को हरपल मनुआ, शिशु रोये वह मां को मिलिया।

हरि-हरि करते मैं खो जाये, लहराता है बस वह छलिया।

भूख हमारी मिट ना पाती, अंखियां रोती है दिन राती।

करे अर्चना हरि सम्भालो, लिख लिख तुमको भेजे पाती।

लहरें तेरी क्या है अपना, बीता जाता है यह सुपना।

रोते प्राण पुकारे तुमको, हमें लगे बस तू है अपना।

2

रामा तेरी धुन प्यारी, क्यों न जाती डूब सारी।

इस जगत का क्या प्रयोजन, तू जाने तुझ पै बारी।

प्यार अपना तू हमें दे, दिल नहीं लगता यहां है।

नयन से यह नीर गिरते, छिप गया तू किस जगह है।

अर्चना स्वीकार कर लो, जिन्दगी का गान दे दो।

तेरे गुण को गाये हम, ईश नैया पार कर दो।

विवश हम कितने यहां है, अतृप्त बने हम भटकते।

लाज मेरी राख लो तुम, विनती यही हम तरसते।

SAANS SAANS MAIN

तू है दाता मैं भिखारी, सुनों मेरी ज्ञान दाता।

दीप दिल में तू जला दे, रूठ मत मेरे विधााता।

तम की चादर बिछी है, कर्म की बेड़ी पड़ी है।

ले चलो सजना मुझे तुम, सांस थोड़ी सी बची है।3

जो इतने क्रूर हुए मुझ पर, राखे उनसे क्या आशा है?

अन्तस में डूबो याद करो, अज्ञात छिपा निर्माता है।

जपता जा तू हरपल उसको, पथ तुझको वह दर्शायेगा।

आशा की ज्योति वही मनुआ, बिन सुमरे तू दुःख पायेगा।

लहर बड़ी कोई छोटी है, हर तरु होड़ का खेल यहां।

ना चैन मिले भटके मनुआ, झर-झर झरते हैं नीर यहां।

पाप-पुण्य, दुःख-सुख का मेला, धीर धारे ना मन हो मैला।

भूख कभी न हमारी मिटती, वहीं मिटाये तम है ैला।

बूंद मिटे कैसे सागर में, विलग हुई वह डोल रही है।

प्रियतम के बिन चैन मिले ना, विरह अग्नि में सुलग रही है।

सभी क्रूरता भूल जगत की, मैं प्रभु जाऊं तुझ पर बारी।

सुपने आंखों में तेरे हो, ना हो जीवन से अब यारी।

4

जलता रहा सदा जीवन भर,थक कर तेरे दर पर आया।

हे हरि तुम अब आखें खोलो, मिटती जाती मेरी काया।

अगम अगोचर पार न तेरा, प्रभु जी हमें सहारा तेरा।

नैया मेरी पार लगा दो, मुझको बीच भँवर ने घेरा।

तू ही आशा इस जीवन की, बन कर मेघ बरस जायेगा।

करूणा के सागर कहलाते, सुख के तू दीप जलायेगा।

BY CHANDRA PRABHAKAR

हरि हरि करते सब पल गुजरे, कभी नहीं तू मुझसे विसरे।

खो जाऊँ सब भूल जगत को, करुँ विनय यह तुमसे प्यारे।

तू ही आशा ना निराश कर, तम है फैला तू प्रकाश कर।

मेरे सर्जक मेरे पालक, शरणा तेरी हूँ प्रभु दया कर।

नयन तुम्हारे चरण धोयें, पल जितने जीवन के गुजरे।

सांस सांस में बस जाओ तुम, हर पल प्राण तुझे ही टेरें।5

गीत कितने ही लिखे, दर्द तुमने ही दिये।

ईश तेरी शरण आया, जा रहे बुझते दिये।

रात दर पर बैठ गुजरे, भीख तुझसे मांगते।

अबल हम मग में अन्धेरा, दीप तेरा चाहते।

प्यार दो मांझी मुझे तुम, दिल हमारा रो रहा।

लुटते आँखो के मोती, तुम बिना क्यों जी रहा।

डगर है अनजान मेरी, जानते ना चल रहे।

आंख तुझ पर ही लगी है, तन यह चाहे न रहे।

तड़ते है हम यहाँ पर, तू पिला जाम अपना।

देख ले बैचेन दिल को, प्यार से वंशी सुना।

नमन को स्वीकार कर लो, कब मिटें हम ना पता।

छू सके न तेरी चौखट, माफ़ करना यह खता।

6

मेरे राम सुन कृपा निधान, बीती जा रही मेरी शाम।

नयना तेरी बाट निहारें, ईश तुम्हीं हो सुख के धाम।

तेरी बगिया खिले यहाँ हम, भटके हमने सहे बहुत गम।

तम की चादर काट न पाऊँ, दीप जला दे मेरे प्रियतम।

जीवन की तू ही बहार है, प्राणों की बस प्यास तुही है।

जगत रचैया हमें देख लो, अन्तिम आशा तू मेरी है।

;षि मुनि ज्ञानी तुझे खोजते, कुछ न जाने बस हम रोते।

जगत पीड़ से हमें उबारो, रो रो विनय यही हम करते।

सब खुशियों के तुम ही मालिक, तुम ही सर्जक हो संहारक।

जाने न कुछ भी अबल हम है, कृपा तुम्हारी चाहे पालक।

अश्रु गिरें जो बने ूल प्रभु, तेरी बगिया को महकाये।

दिल में मेरे तुम बस जाओ, पाप पुण्य ना ि डस पायें।7

भूल जा मन भूल जा सब, ना शिकायत अब करे।

दिल लगा ले हरि चरण में, क्यों किसी से तू डरे।

छूटते सब जा रहे है, जा रहा तन टूटता।

क्यो करे आसक्ति जग में, जायेगें कित न पता।

प्यार की है भूख इतनी, जीव जग में चाहता।

बिन हरि कहीं वह न पावे, जगत में है तड़ता।

अपने पल में संग छोड़े, रंग अनेकों वासना।

धान्य हरि से साथ जोड़े, कुछ नहीं बिन साजना।

वह रही नदियां यहाँ पर, बहता जा पी रट ले।

जाते साजन से मिलने, उसका श्रृंगार कर ले।

सुख दुखों की ले कहानी, इस जगत में भटकते।

धान्य हरि के प्यार डूबे, ;षि मुनी सब तरसते।

8

ईश हमारी तुम सुन लो, हम शरण तेरी आ गये।

चहुँ ओर तुमको खोजते, नयनों में अश्रु आ गये।

नाव मेरी भटकती है, ईश तुम्हारे हाथ में।

डूब जाये ना भंवर में, हम हारे इस संसार में।

पीड़ के बादल हटा दो, प्यार का अमृत पिला दो।

तुम बसो मेरे हृदय में, यह मुझे वरदान दे दो।

इस सकल जग के रचैया, तुम सुनो बंशी बजैया।

ज्ञान के भण्डार हो तुम, कर कृपा हो पार नैया।

खेल सुख-दुख का जगत में, ईश तुमने ही रचाया।

खोजते तुम हो अगोचर, रास तुम बिन कुछ न आया।

तेरे पथ चलते जायें, अश्रु की बरसात ले कर।

ना हटाना इस डगर से, सब मिटें शिकवे दया कर।9

सागर की लहरों में बहते, पत्ते इधार-उधार सब खोते।

मिटे जलधा में निज बल जाने, ज्ञानी हम उसको ही कहते।

प्यार यहाँ बन-बन कर खोता, सुपने ले ले जियरा रोता।

सुख दुख की चक्की में पिसकर, सारा ज्ञान यहाँ पर खोता।

हरि भजन बिन ठौर यहाँ ना, तप्त हृदय में जल वर्षाये।

वही सहारा बनता जग में, कोई काम न जग में आये।

हरि ना भूलो बहते बहते, उसका मन में दीप जला लो।

इस आनी जानी दुनिया में, उसका ही तुम धयान लगालो।

सकल सि) चेरी है उसकी, माँग लिया हरि क्या माँगोगे ?

बसे नयन में जिसके भी हरि, नीर नयन के तम काटेंगे।

हरि हरि करते लय हो जायें, सब उसकी माया का खेला।

अबल ईश हम प्रीति बढ़ालो, फल होय दो दिन का मैला।

SAANS SAANS MAIN

बसे रहो मेरे नयनों में, अंखियां तुझसे ही हरि लागी।

बीत जाए रैन यह मेरी, कृपा तुम्हारी सुरति जागी।

हरपल तेरी करें अर्चना, कभी न भूले तुझको सजना।

नमन तुझे है दीनबन्धु हो, बीते गुन गाते यह सुपना।

जल ही जल चहुँ ओर दीखता, कूल मुझे बस तुही दीखता।

लाज राख लेना बालक हम, अश्रु नयन से ईश निकलता।

अगम अगोचर पार न तेरा, नैया छोटी सागर गहरा।

हिचकोले यह हरपल खाये, देखूँ होवे कभी सवेरा।

जग के पालक शरण राख ले, मन्दिर अपने ईश बसा ले।

सोऊँ जागूँ बस तुझमें ही, विनय हमारी प्रभु तू सुन ले।

सांस सांस में जपूं तुझे प्रभु, नीर चरण तेरा ही धोवे।

वर देना ऐसा प्रभु मुझको, शीश झुके ना कभी उठावे।11

बिन हरि चैन नहीं पाये मन, हरि को याद करे जग सपना।

किससे दिल को और लगायें, तुझे कहें ना प्रभु हम अपना।

बने विवश चलते जाते हैं, डोर हमारे ना हाथों में।

खोज रहे हैं अपनी मन्जिल, सौंप सकें हम तुझ हाथों में।

जग के सुख दुख से पीड़ित हो, भाग रहा जिय इधार उधार है।

अहम हमारा हारा जब से, तुझ बिन ना कटे सफ़र है।

देखे हारा थका मुसाफ़िर, चैन मिले उस मठ को खोजे।

पीड़ा जब आंसू से बहती, भला इसी में हरि को खोजे।

तप्त हृदय पर बूंद गिरे जब, तन मन यह शीतल हो जाये।

बढ़ती जाये प्रीति डोर जब, बार बार सुपनों में आये।

प्यास बुझे ना राम पुकारे, कण-कण से सुगन्धा फ़िर आये।

BY CHANDRA PRABHAKAR

यादें उसकी लागे प्यारी, नहीं और कुछ मन को भाये।

12

प्राण पुकारते तुमको राम, ढलती जा रही मेरी शाम।

इस मेले में कहाँ खो गये, कैसे पाऊँ तुझे मैं राम।

बहें नीर करे अर्चना, आन मिलो तुम मेरे सजना।

कुछ भी मुझको नहीं सुहावे, व्याकुल मैं हूँ जग के अंगना।

ले चल पार करा दे नदिया, डूबूं मैं न छिपो कन्हैया।

आंखो में बरसात हुई है, मुझे बहा ले चल ओ छलिया।

तेरे है उपकार अनेकों, मैं तो ठूंठ जगत में आया।

दिल अब चाहे लगे तुझी में, कृपा करो अब तू ही भाया।

सिर रख चौखट पर हम रोवें, देख हमें प्रभु जी तुम लेना।

लिये पेट पर हाथ िरे हम, भटके जग में ले ले सपना।

सांस-सांस में तू ही रम प्रभु, थका मुझे ना कही लुभाओ।

दे अपने मन्दिर का कोना, मेरे नैनन में बस जाओ।13

हरि राखो तुम लाज हमारी, आंसू से भीगी मैं सारी।

कहाँ जायेंगे हमें न पता, प्रभु पकड़ो बहियाँ मेरी।

ज्ञान के दाता कर सबेरा, बीत रही सब रतियां काली।

सुखदायक तुम मंगलकर्ता, नैनन से मिटती ना लाली।

मेरे जीवन प्राण पुकारें, नीर बहें पथ को न जाने।

सृष्टि रचैया तेरी लीला, ;षि मुनि हारे तुझे बखाने।

कहाँ जाये हम है अज्ञानी, आशा एक तुही है मेरी।

अनजानी गलियों में घूमें, करो कृपा मिट जाये ेरी।

सुख दुख की इस धूप छांव में, खोज रहा तुझको मनुआ।

पाप पुण्य कर्मों के बन्धान, उलझ उलझ पड़ता है मनुआ।

तुम्ही उबारो तो तर जाऊँ, डूबी जाती है यह लुटिया।

आंसू को स्वीकार करो प्रभु, दे दे मुझको अपनी छैंया।

14

क्या ठीक कहें क्या गलत कहें, जब कठपुतली हम तेरी हैं।

नयनों से नीर गिरे झर झर, हम दया चाहते तेरी हैं।

तू ज्ञान दीप को ईश जला, ठोकर खा खा कर हम गिरते।

अपनी पीड़ा को तुझे कहें, प्रभु विनय हमारी तुम सुनते।

डोरी हाथों में तेरे है, भूलें न जब तक सांसें है।

अबल हम जाने नहीं कुछ भी, सांस जपे तुझको चाहे है।

नाम तेरा ले अश्रु गिरें, बन फूल जगत को महकायें।

ना ऐसा कोई कर्म करें, जो ईश स्वयं से शर्मायें।

नदिया पार करा तू ले चल, आंखे तुझ पर लगी हुई हैं।

अनजानी गलियों में भटकूं, माफ़ हमें कर खता हुई है।

जमकर हमें नचा नाचेगें, चाहे तेरा धयान न टूटे।

डोरी तेरी से बंधो हुए, ना प्यार कभी मुझसे टूटे।15

तुम न कहते हम भजे हैं, नीर अखियों से बहे हैं।

तुम बनो निष्ठुर नहीं प्रभु, चरण तेरे आ पड़े है।

बने पागल भागते हम, धूल जग की चाटते हम।

सब रस पड़ जाते फीके, बिन तेरे अकुलाते हम।

तोड़ तुमसे प्रीति प्रभु जी, ना हमें जग में ठिकाना।

मैं रोता पकड़ो दामन, लाज मेरी नाथ रखना।

छलिया बन जी न चुराओ, चल रहा अनजान राहें।

खिलते बगिया में तेरी, प्यार तेरा ईश चाहे।

शून्य तेरा रूप है प्रभु, सभी समाया इसमें है।

कण-कण में व्याप्त तू है, भागते जाना कहाँ है ?

ईश ले हम वासनायें, परिकर्मा तेरी कर रहे।

ज्ञान यह मुझमें जगा दे, प्रभु मैं नहीं बस तू रहे।

16

भज ले राम भजे ले राम, ढलती जा रही यह शाम।

प्रीति जोडू तुमसे राम, संकट दूर करो हे राम।

प्राण पुकारें तुझे राम, नयन गिरायें अश्रु राम।

जीवन नौका पार करो, बनो मेरे खेवट राम।

तेरे गुन हरपल गायें, दया सागर सुन ले राम।

मन चहूँ दिशा में भटके, चैन मिले न मुझको राम।

कृपा तेरी हमें मिले, पायें तुझे मेरे राम।

अपना मुझे बना सेवक, पीड़ा मिटे सारी राम।

दे दे मन्दिर का कोना, आंसू बहें देखो राम।

सकल मही का तू स्वामी, सर्जक तुम्ही पालक राम।

करें अर्चना तुम्हारी, बसो दिल में मेरे राम।

*राम राम जपते जपते, राम रहे तू ढले शाम।*17

समझ हमें दे जपे तुझे हम, कट जायें सब जग के बन्धान।

ताप हरो व्याकुल मन मेरा, तुम बिन कौन सुनेगा क्रन्दन।

बहे जा रहे दिशा ज्ञात ना, डर लागे मन धौर्य रखे ना।

लाज रखो हे हरी हमारी, चरण पड़े हम तू ठुकरा ना।

हरि हरि धयान धारें हम हरदम, खो जाये जीवन की सरगम।

पल भर तुझे नहीं बिसरायें, अश्रु चढ़ाये तुमको हरदम।

मत उलझा तुझमें रंग जाऊँ, विलख रहा मैं कुछ ना जानूँ।

हरि संभाल तुम मुझको लेना, तुम ही मेरे सब कुछ मानूँ।

तुम अनन्त के स्वामी हो प्रभु, कोई जान न पाया तुमको।

करें अर्चना जग के कर्ता, तुझे न भूलें हम इक पल को।

पाप पुण्य दुख सुख का मेला, बहा जा रहा सारा रेला।

मैं अज्ञानी तुझे पुकारूँ, मिले प्यार तुम्हारा छैला।

18

चाहत यहाँ बनती क्या, चाहत ना चाहिये।

चरण की धूल बस मिले, हमें प्यार चाहिये।

जीवन यह बहका सदा, अनुभव से शून्य थे।

रोते रहे यहाँ बहुत, तुमसे भी दूर थे।

कैसे तुझे मिले सनम, रोना ही जानते।

हे नाथ तुम करो कृपा, आंसू यह ढुलकते।

जग रास रंग में उलझ, नित विष को पी रहे।

तेरी डगर मिले हमें, गम कोई ना रहे।

ंस वासना के चक्र में, बनते पागल यहाँ।

न भूख है मिटती कभी, अनजाना पथ यहाँ।

स्वीकारो प्रभु नीर को, भटके हैं हम सदा।

कुछ बचते शेष हैं, ना होना तुम जुदा।19

कहन सुनन को कुछ न लगता, कह कह हारे प्राण हमारे।

अन्धाकार से ढकी चदरिया, कृपा करो तू हमें उबारे।

अनजानी इस पगडण्डी पर, गिर गिर कर प्रभु हम उठते है।

बिना तेरे प्राण यह प्यासे, हरदम ही रोते रहते है।

सर्जक तुम आनन्द तुम्ही हो, भगवन मेरे छिपे कहाँ हो।

रोयें अँखिया तुम बिन सजना, इन प्राणों की प्यास तुम्हीं हो।

करूँ आरती हरदम तेरी, जिव्हा जपे नहीं कर देरी।

चाह यही ना पल भर भूलूँ, नाथ सदा मैं तेरी चेरी।

पार लगा दो मेरी नौका, रोना जाने हम अज्ञानी।

ज्ञान धयान के तुम ही स्वामी, प्यासे प्राण मांगते पानी।

20

दीनबन्धु तुम सुख के कर्ता, शरण तुम्हारी आयो राम।

दुख भंजक तुम जग के पालक, सुन लो हमारी अब तो राम।

कण-कण करता है परिकर्मा, सुरति तुझी में फ़िर क्या डरना।

अपने वश में नहीं यहाँ कुछ, तेरी मर्जी से ही बहना।

नीर ढुलकते हमें संभालो, अन्धाकार को दूर भगा दो।

भीगे धारती खिले पुष्प फ़िर, ईश्वर सारे ताप मिटा दो।

बही जा रही जीवन नदिया, तुम बिन सूना जीवन रसिया।

प्रीति न तोड़ो निष्ठुर मुझसे, झेल रहे दुख तुम बिन छलिया।

जिसको मिला प्यार तुम्हारा, इस जग से वह ना घबराया।

राम राम की धुन में डूबा, धान्य हुई यह नश्वर काया।

सुन लो राम हमारी सुन लो, तुम्हें पुकारें तुम न भूलो।

*नयना नीर गिराते मेरे, मेरे सर्जक मुझको लख लो।*21

तुझे हम खोजते फ़िरते, नहीं हम खोज पाते हैं।

विवश होते यहाँ जग में, नयन में नीर आते हैं।

चरण रज यदि मिले तेरी, दुखों के पार जाये हम।

कटें सब कर्म के बन्धान, तड़ते ईश जग में हम।

संभालो ईश तुम हमको, तुम्ही सर्जक हमारे हो।

न जी हमसे चुराओं तुम, दया के प्रेम सागर हो।

जगत जीता तुझी में है, तुझी में सांस है लेता।

बताओ क्यो तड़ इतनी, तुझे मैं याद कर रोता।

तुम्हारी यह बगिया है, तुम्ही इसके प्रभु माली।

बहा दो प्रेम की गंगा, न दुख हो हम रहे खाली।

सदा सुमरन करें तेरा, दुखों के पार ले जाना।

तेरे बालक अज्ञानी, हमें तुम मफ़ कर देना।

22

तेरे गीतों को गाऊँ, कृपा मुझ पर प्रभु होगी।

बहें जो नीर अंखियों से, चरण धाो लूँ दया होगी।

नहिं मुझमें कोई भी बल, दया बिन चल न पाऊँगा।

सदा लेता रहा सुपने, दया बिन मैं न पाऊँगा।

जगत में मैं बहुत भटका, कही ना मिल सका साया।

ढुलकते नीर यह देखो, न करना दूर तुम छाया।

गुजरते जा रहें हैं पल, बची कुछ सांस जीवन की।

नयन में तुम बसो मेरे, लखूँ तेरी सदा झांकी।

तुम्हारा प्यार जो पाये, उसी की धान्य है काया।

यह प्यासा जी तड़े है, मिटाओ भ्रम ने भटकाया।

चरण में हम पड़े तेरे, जुदा तुम ना कभी होना।

*नयन से नीर जो निकलें, तुझे खोजें यही बयना।*23

जीवन रखता है आशायें, पूरी कर कोई ना पाये।

विक्षिप्त हुए से हम घूमें, ना मन को हम समझा पाये।

विधिा के हम यहाँ खिलौने हैं, इसको हम समझ सके क्यों ना?

सब छोड़ रहे हैं साथ यहाँ, क्यों पकड़ रहे हम समझे ना?

बनती मिटती कितनी चाहें, नित नई संजोते आशायें।

यदि प्रीति लगे जलधा बीच, भय दूर होंय तरते जाये।

सुख दुख की धाूप छांव में तन, बढ़ता गिरता जाता हरपल।

नहीं हिय बसे जब तक तेरे, ना शान्ति मिले रोये हरपल।

बहती नदिया बहती जाती, रोके रूकती ना कभी यहाँ।

खिलते मुरझाते ूल यहाँ, अंसुओं की है बरसात यहाँ।

हम जलधा बीच बन लहर चलें, जाने न कोई ठिकाना हैं

अन्तस में लखे जलधा को यदि, सम्बल बस वही हमारा है।

24

कण-कण में हरि तू बसा, खोज रहे जग मांहि।

सुरति जगा दो ईश तुम, सारे भ्रम मिट जांहि।

सागर सा लहराय तू, अलग लहर है नाहिं।

भटक रही पिय मिलन को, छिपा जो अंतस मांहि।

हरि हरि बस जपना यहाँ, समझ यहाँ तू नांहि।

ूटा जाये बुलबुला, प्रीति लगा हरि मांहि।

कुछ पल का यह मेल है, जी भर कर तू देख।

जो कल तक थे अब नहीं, मिटते जाते लेख।

आये खाली हाथ सब, रो रो मांगे दूधा।

कौन पिलावे जाने न, कौन ले रहा सूधा।

सभी रूप हरि में छिपे, बस तेरा कुछ नांहि।

हरि हरि बस जपते रहो, कटे फ़ंद जग मांहि।25

तुझ चरण में आ पड़ा हूँ, जगत का स्वामी तुही।

पाप क्या है पुण्य क्या है, जानता मैं कुछ नहीं।

लाज मेरी राख लेना, तम में कुछ ना दीखता।

व्यथित हो तुमको पुकारुँ, तुम न रुठो देवता।

ज्ञान का दीपक जला दो, प्रेम का दरिया बहा।

तन-मन सब उसमें भीगें, बना सुन्दर तू जहाँ।

तेरे दर पर बैठ कर प्रभु, जा रहे पल यह कटे।

तेरी कृपा दास पर हो, सभी बन्धान तब कटे।

नमन हम करते तुझे हैं, याद तेरी आ रही।

तुम बिना जीना नहीं कुछ, सता तू मुझको नहीं।

तुम दया के सिन्धाु हो प्रभु, नीर बहते देख लो।

बिन दया हम चल न पाये, अबल हम पहचान लो।

26

चाह मुक्ति की क्यों बन्धान है, हरपल देखें परिवर्तन है।

निशदिन नई संजोते आशा, खाली जातें क्या झिलिमिल है।

अँखियां रोवें वह नहिं आवें, जग मरीचिका में उलझावे।

कैसे मन को मैं समझाऊँ, हरि बिन मुझको कुछ नहिं भावे।

मेरे देवता तुम ना रुठो, तेरी बगिया महक रही है।

बिन तेरे ना अच्छा लगता, कसक कलेजे करक रही है।

तुझ चरणों में हम बस जायें, ठगनी माया से बच जाये।

रोये मनुआ तुझे पुकारें, लाज रखो प्रभु आंसू आये।

सम्बल दो हम हार चुके हैं, चले डगर हम तेरी आयें।

SAANS SAANS MAIN

दो पल के इस जीवन में प्रभु, चाह प्यार तेरा मिल जाये।

तू ही मुक्ति गिरें सब बन्धान, रुक जाये सारा परिवर्तन।

अनहद गूंजे सकल सृष्टि में, खो जाये तब सारा क्रन्दन।27

मन गाये क्यों, मन गाये क्यों, अपनी तू व्यथा सुनाये क्यों ?

पीड़ित दुनिया से पीड़ा ले, तू निज को और रुलाये क्यों?

तू कह दे तो गाना गाऊं, तू कह दे तो ध्यान लगाऊं।

अपने बल कैसे मैं आऊं, मैं मन को कैसे समझाऊं ?

सारी पृथ्वी नृत्य कर रही, प्रेम पगी अपनी सरगम में।

हटूं न पीछे बल दो ऐसा, अश्रु नयन के चढ़ा सकूं मैं।

चाहे जैसे मुझे चलाये, रहूं रजा में राजी तेरी।

सुमन कंट मैं नहीं निहारु, करुं अर्चना बस मैं तेरी।

जी चाहे मैं करुँ समर्पित, जी का ही तेरे चरणों में।

क्षमा करो यह गलती मेरी, नहीं जानता पर विधाी को मैं।

कर सको क्षमा तो कर देना, कर सकता मैं कुछ और नहीं।

ले साज अधाूरा फिरता मैं, रीता घट है बन्दगी नहीं।

जग में दुखों को देख देख, बैचेनी घर कर लेती है।

मिलता न किनारा हमको है, बेबस हम होते जाते है।

तुमको प्रणाम मेरा प्रणाम, आशीश मुझे तुम फिर-फिर दो।

कर सकूं अर्चना मैं तेरी, दो साहस मुझको साहस दो।

लूली लंगडी इस श्र)ा को, स्वीकारो भूल न जाऊॅं मैं।

विश्वास मुझे इतना तुम दो, डरता हूँ भूल न जाऊँ मैं।

तेरा मैं अर्थ समझता ना, मूरख मतिमन्द सदा से हूँ।

जग के दुख से तू ना बिचलित, जान इसे आश्चर्य में हूँ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

आ जाओ लगादो पार हमें, हम डूब रहे हैं सागर में।

डूबती नैया के खेवट बन, पार करो इस भवसागर से।

कभी डुबोते कभी तराते, क्यो खेल रहे मुझसे ऐसे।

गिरते आंखों के नीर गिने ना, तुम क्यो रूठे हो मुझसे ?28

हाय विवशता कैसी यह है, खोजा प्रियतम को खोज न पाया।

मन क्लान्त जर्जर शरीर है, प्रियतम को कुछ न दे पाया।

रीझे किससे नहिं पता विधाा, प्रियतम मुझसे क्यों दूर हुआ।

आंसू की अविरल गंगा में, मिलने का सुपना चूर्ण हुआ।

इस मृगमरीचिका आंगन में, पागल सा होकर मैं फिरता।

सुपनों की लड़िया टूटती है, प्रियतम का द्वार नहीं खुलता।

प्रियतम की याद सतायेगी, तड़ायेगी बिलखायेगी।

जीवन के रंग अनेकों हैं, पल-पल में वह भरमायेगी।

निष्ठुर प्रियतम ना बोलेगा, मेरे आंसू से खेलेगा।

वह खेल हमें प्यारा होगा, हमकों उसमें मिटना होगा।

पीड़ा का सागर लिये डोलता, नहीं तृप्त हो पाता हूँ।

व्यथित जगत को देख-देख, रोता हूँ और तड़ता हूँ।

मन्दबुf) अज्ञान लिये मैं, ज्ञान खोज में बढ़ता जाता।

मुझे संभालो प्रियतम तुम, नहीं संभल हूँ अब मैं पाता।

दीनहीन जर्जर मन मेरा, चलने से भी डर लगता है।

फिर भी कैसे साहस लेकर, डगर तुम्हारी चल पड़ता है।

भागा बहुत तुम्हारे पीछे, पर तुम मेरे हाथ न आये।

जोगी भी मैं बन न पाया, बीच भंवर में डूब न पाये।

चलता हूँ पर कदम-कदम पर, ठोकर खा कर गिर पड़ता हूँ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

िर अदृष्य साहस को लेकर, जाने कैसे चल पड़ता हूँ।

कुछ भी तो बस पास नहीं है, क्षमा करो तुम प्रियतम मेरे।

शीश चढ़ा लो निज चरणों में, कृपा करो तुम प्रियतम मेरे।

प्यासा मैं जनम-जनम से हूँ, प्यासा ही मुझको रहने दो।

बस झलक दिखादो तुम अपनी, मिटता हूँ बस मिट जाने दो।29

अश्रु तेरी ही अमानत, उनको तुम संभाल लो।

मिलते हैं मिटी में ये, इनको तुम्ही थाम लो।

हूँ भ्रमित रस्ता नहीं हैं, ठोकरें मैं खा रहा।

ना पता अन्जाम का, चला बस चलता रहा।

कौन करता है अवज्ञा, कौन आंसू पोंछता ?

कौन समझेगा यहाँ पर, व्यर्थ पीछे दौड़ता।

स्वार्थ में सब लिप्त हैं, है फ़िकिर किसकी पड़ी।

िर भी यहाँ पर घूमता, दर्द की आंसू लड़ी।

हाय यह कैसी कसक है, जो शून्य में जाती।

देखते ही देखते यह, सब लुप्त कर जाती।

किसको सुनाएं यह चुभन, सुनाने को कौन है ?

अपने ही जाल में ंसा, यहाँ दिल बैचेन है।

चल-चल के हार रहा क्यों, हुआ मुझसे दूर है।

मिलकर भी हम न मिल सके, हुआ कैसा खेल है ?

आंसूओं के हार को क्यों, चाहेगा तुम्ही कहो।

आओ हंस लो संग मेरे, दर्द दुनिया के सहो।

जाल अपने बुन रहे हम, धार में सब बह रहे।

अश्रु से भीगी कहानी, दर्द से सब कह रहे।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

दर्द दामन में छिपाये, फिर रिझाते है तुम्हें।

कौन सी है बेबसी वह, कह सके ना हम तुम्हे।

ना कर सके हम आरती, जिन्दगी थी स्वार्थी।

भज सके नहीं हम तुम्हें, नहीं बने परमार्थी।

सत्य जीवन का कहाँ हैं, खोजता मैं फिर रहा।

है झरोखा कौन सा वह, दीदार उसका जहाँ।30

कहने को कुछ भी नहीं यहाँ, कहकर फिर भी मन बहलाते।

आंसू गिरने का मोल नहीं, फिर भी आंसू बहते जाते।

दुख दन्शों से पीड़ित है तन, यह चाह लिये चलता प्रतिपल।

सुख की चाहत में घूम रहा, यह विस्मृत कर होगा क्या कल।

आंसू यह झर-झर गिरते हैं, फिर इस अनन्त में खोते हैं।

कित जायेंगे ना जान सके, पथ में हम तुमको तकते हैं।

कैसा यह ब्रह्माण्ड रचाया, दुःख दर्द का जाल बिछाया।

अमी खोजता रहा जगत में, नहीं संभल फिर भी तन पाया।

कर क्षमा परमेश्वर मेरे, अज्ञानी हैं बालक तेरे।

रोते इन नयनों को देखो, टूटेंगे यह कैसे घेरे।

गीत उठाऊँ तेरा प्रतिपल, तुझमें ही बस डूबा जाऊँ।

तेरा ही संगीत सुनाऊँ, अपनी सुधि को मैं बिसराऊँ।

जग के वैभव फीके लगते, तुझसे नाता जोड़ सका ना।

लक्ष्यहीन मैं हुआ जगत में, अब तो नाथ कृपा कर दो ना।

प्यार चाहते प्यार न मिलता, यहाँ स्वार्थ का धान्धाा पलता।

व्याकुल मनुआ सोच रहा है, हरदम काहे यह दिल जलता।

बुझे हाय नयनों के दीपक, उनमें ज्योति न मैं दे पाऊँ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

अपनी उलझन में ही ꣻसकर, आँखों से बस नीर बहाऊँ।

खाली हाथ जगत में आये, खाली हाथ यहाँ जाना है।

समझ नहिं क्यों मन को आती, पल-पल तू काहे रोता है।

टूटी-ꣻटी नौका है यह, डोल रही इस भवसागर में।

ना किनारा कोई दिखता, डूबेंगे हम किन घड़ियों में।

दया करो हे दयानिधी तुम, इस जग को उजियारा दे दो।

तेरे ही गुण गाये सारे, खुशियों की तुम वर्षा कर दो।31

किसको समझाना है हमको, निज को संभाल लें कꣻी है।

जो दर्द उबलता सीने में, ना मिटा सके ना ज्ञानी है।

झर झर आंसू बहते मेरे, इनको तू पोंछ न पाता है।

देखे उत्तंग शिखरों को तू, यह मन का मैल न जाता है।

चाहत को ले ले जीते हैं, उसमें बन मिटते रहते है।

परिवर्तित जग की छाया में, बस सुपनों में हम जीते है।

क्यों विलग हुए तुमसे ईश्वर, क्यो हम तुमको है भूल गये। बन अज्ञानी ठोकर खाते, दिन सारे रोते बीत गये।

जल-जल कर यह बुझ रही शमा, जीवन का खेल हुआ कैसा?

चल-चल के हारा इस जग में, ना जाना तू भी है कैसा ?

आवाज थरथराती मेरी, चहुँ ओर अन्धोरा छाया हैं।

छिप गये कहाँ मेरे प्रियतम, रुठा मेरा भी साया हैं।

ना आंसू यहाँ पोंछ पाये, बहते हैं दर्द की गंगा में।

ऐसे निष्ठुर क्यों बने हुए, जीवन खोता अंधियारे में।

क्यों है अनाथ हे ईश बता, जब नाथ हमारे तुम ही हो।

गर्दिश में रखते आस यही, बस साथ हमारे तुम ही हो।

बह जा मन तू चुपचाप यहाँ, कर स्वयं समर्पित उस प्रभु को।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

कट जायेगा दो दिन का पथ, जाता जीवन मिट जाने को।

कैसे हम दिल को समझायें, तुझ बिन हर पल दहशत खाये।

सूनी आँखे सब ओर लखें, क्यों नजर नहीं तुम हो आते ?

तुम रुठे हम कैसे रुठे, सामर्थ नहीं कुछ अपनी हैं।

जीवन की ज्योति बुझी जाती, नयनों में बस अब पानी हैं।

करुणा के प्रभु तुम सागर हो, तुम दया दृष्टि कर लख लेना।

हो जाये फ़ल मेरा जीवन, तुम अपना दास बना लेना।32

हे ईश तुम वन्शी बजा दो, हम सुन सके ना सजा दो।

हम तो घिरे अज्ञान से हैं, जान तुम यह क्षमा कर दो।

प्रभु बन लहर मैं हूँ अधूरा, क्यों सागर को हाय भूला।

मैं भूलकर तुझको घुटन ले, ढूंढता फ़िरता अकेला।

कैसे तुम्हीं हो हम मनायें, विधि नहीं हम जानते है।

आस लिये मिल जाओगे तुम, प्राण बस यह तड़ते है।

कर्म के बन्धान में बंधाकर, घिरे निशदिन हम हुये है।

हम तो अवश देखो प्रभु जी, फ़ेर मुँह को क्यों लिये है ?

निहारती अंखिया यह तुमको, बने तुम्ही निर्मोही क्यों ?

जो अग्नि हीया में लगी है, तुम बिना हम बचे ही क्यों ?

ज्ञानी भी जपते हैं तुझे, खो जाते तुझे ढूंढते।

प्रभु तुम दया का हाथ रख दो, तेरे बिना हम तड़ते।

यह चक्र चलता है यहाँ पर, है वश यहाँ चलता नहीं।

नामी बन जाते है राजा, तन खाक हो जाता यहीं।

है क्या प्रयोजन इस जगत का, सोंचकर यह मन थका है।

यह भूख मिटती ही नहीं है, जगत सारा ही फ़ंसा है।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

यहाँ अपने-अपने दर्द ले, जाने कित गिर जायेंगे।

कितने आंसू यहाँ गिरेंगे, क्या पग नहिं हम पायेंगे ?

बुझे ही हम तो जा रहे है, हार है यह जिन्दगी की।

पथ नहीं कोई दीखता है, खा रहे ठोकर समय की।

सारी दुनिया हँस रही है, रुठ क्यों हमसे गये हो।

तुम देख लो नजरें उठा कर, ईश सर्जक तुम बने हो।

प्रभु वन्दना स्वीकार कर लो, कुछ हमें भी गान दे दो।

इस नयन की जो झील सूखी, मेघ बन कर तुम बरस दो।33

तुझे मिला न मेरे ईश्वर, यह जीवन मुझसे रुठ गया।

ठीक गलत के चक्कर में पड़, यह सारा जीवन बीत गया।

थर-थर कांप रहे पग मेरे, धाक-धाक दिल मेरा करता है।

कहाँ छिपे हो भगवन मेरे, रोते नयना यह पूछे है।

आओ बोलो मुझसे बोलो, मेरी भी पीड़ा तुम सुन लो।

हुआ विलग मैं दर-दर भटका, मेरी भी तुम सुधा को ले लो।

बन्शी की धुन मुझे सुना दो, जग का यह तुम मोह भुला दो।

टूटी नैया पार लगा दो, अवगुण अब तो हाय भुला दो।

चलता हूँ पर दिशा न पाता, ठोकर खा प्रतिपल गिर जाता।

कौन प्रयोजन लिये घूमता, तुम्हीं बता दो मेरे दाता।

कैसे समझाऊँ इस मन को, मैं देख व्यथित हूँ इस जग को।

तुम रुठोगे तो जायें कहाँ, कौन सुनेगा घट पीड़ा को ?

प्रभु क्या अपनी है नियति यही, ठोकर खा-खा कर चलता हूँ।

यह नयन हुये नीरस मेरे, रो भी ना अब मैं पाता हूँ।

देखूँ मैं किस-किस को देखूँ, किस सुख की चाहत को माँगू।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

पल-पल परिवर्तित इस जग में, प्रभु तुझसे विलग न वर माँगू।

रो-रो कर रैन बिताऊँ मैं, तुम कहाँ छिपे मेरे भगवन ?

सिंचित धारती यह कर डाली, आयेंगे पल्लव कब भगवन ?

पी-पी रटे पीव नहीं आवे, नित अँखियन से नीर बहावे।

कित खोजूँ कुछ नहीं सुहावे, जियरा मोरा क्यों नहीं जावे ?

बरसे अँखियां बूंद-बूंद कर, अविरल बह क्यों नहीं डुबावें ?

पी बिन किससे नेह लड़ावे, जन्म वृथा बीता ही जावे।34

दो बूंद प्रेम की पा न सके, अपनी तो दुनिया जलती है।

इस अथाह सागर में देखो, यह दुनिया कैसे पलती है ?

हर दर्शन कदम-कदम पर है, मोहित होकर सब सुनते है।

व्याकुल मन सोच रहा मेरा, निज पीड़ा में क्यों पलते है ?

आनी-जानी इस दुनिया में, सब चंचल और मन चंचल है।

किसको आज सुनाए पीड़ा, पीड़ित तो सारा जग ही है।

जी आज चाहता है रोना, रोऊँ क्यों समझ नहीं आता।

पीड़ा के अन्तस्थल में ही, जब टूट चुका इससे नाता।

चिन्ता न करो निष्ठुर मेरे, मैं प्रेम गीत न गाऊँगा।

जलते अरमानों के शोलों में, तुम्हें नहीं दहकाऊँगा।

खुश रहो तुम अपनी दुनिया में, अपनी दुनिया तो लूटने दो।

हम प्रेम पथिक की डगर अलग, हमको तो तिल-तिल जलने दो।

अपनी पीड़ा को सब बोले, अपने दुखड़े सब ही खोले।

पागल मनुआ तू क्यों बोले, जीवन में क्यों विष को घोले ?

अपनी-अपनी नियति सभी की, बुरा भला किसको कहते हैं ?

पागल मनुआ क्या रो-रोकर, जीवन में लाया पतझड़ है।

BY CHANDRA PRABHAKAR

इस अनन्त पथ का राही, वह हमें छोड़ कर भागा है।

हम रोते हैं उसको लेकिन, उसने तो नाता तोड़ा है।

हूँ प्रेम पियासा पंछी मैं, बन शलम शमा पर आऊँगा।

व्याकुल मन सोच रहा मेरा, क्या उनको मैं पा पाऊँगा ?

आँखों का पानी ही अब तो, सभी कलुषता को धोएगा।

नतमस्तक हो उस अदृश्य के, चरणों में पड़ कर रोयेगा

35

जय हो रामा जय हो रामा, हूँ शरण मैं तेरी राम।

मन्त्र है यह मेरा पूरा, नहिं भुलाना मुझको राम।

इसको जपे फिर हम सुखी हो, ना भूले नहीं दुखी हों।

बहती हैं सागर की लहरें, ना पता फिर हम कहाँ हों।

हम राम में डूबें सदा ही, उस सगर की लहर हैं हम।

बस जान जायेंगे उसे हम, जायेंगे दुःख पार हम।

हम राम को पूजें सदा ही, पग अश्रु से धोते रहे।

कभी रीझ जायेगा हृदय, निज को समर्पित कर बहें।

यहाँ कंटकों से पथ भरा है, राम को दिल में बसाना।

चलते जाना हो के निर्भय, बीत जायेगा जमाना।

तू जप यहाँ पर राम रामा, दुख नहिं सतायेंगे तुझे।

यहाँ इस अंधेरी रात में, बन दीप मग देंगे तुझे।

तुम भूल कर विसरा न देना, जीवन दो दिन का मेला।

सुन खाक इस तन की बनेगी, जान मन कर तू न मैला।

यहाँ लहर सागर में बहती, पर लहर सागर न लखती।

देखे न सागर राम को यह, हाय यह निशदिन बरसती।

SAANS SAANS MAIN

हम राम सुमरे राम सुमरे, राम ही अन्तस बसा है।

दीदार जब होवे उसी का, ना कोई संकट रहा है।

सब ओर देखो राम को ही, सुन ले उसी का शोर है।

उसको समझ नहीं पाये हम, बस जिन्दगी बेमेल है।

बह रही यहाँ हमरी नौका, हम ले सहारा पार हो।

रैना आती जा रही यहाँ, फिर नहीं कोई दर्द हो।36

अंधियारे में ज्योति जला दो, हो जाये फिर ईश सबेरा।

नहीं लगे भागे मन मेरा, दीखे और न कोई डेरा।

तुझको छोड़ कहाँ जाऊँ मैं, और न पथ दीखे मोहि ना।

नयना रोवे तू नहिं आवे, कसक कलेजे से जाये ना।

भटक-भटक मन हुआ बाबला, हो कैसे दीदार सांवला।

इन रोती अंखियों को प्रभु जी, रुठे तुम क्यों नहीं संभाला।

पल-पल देखूँ बाट तुम्हारी, डाली भी अब भई पुरानी।

शरण तुम्हारी पड़ा सुधी लो, तड़े मेरी हाय कहानी।

नयन-नयन में दीप जले हैं, फिर ईश्वर काहे बुझे हैं।

अज्ञानी बन घूम रहे हैं, पापों से किस लिये सने है।

अमी प्यार का ईश पिला दो, मिटे तुम्हीं पर राह दिखा दो।

बीता जाता जीवन सपना, इस सपने में फूल खिला दो।

धूप दीप नैवेद्य नहीं हैं, तुझे चढाऊँ फूल नहीं है।

खाली झोली लेकर फिरता, पाऊँ मैं सामर्थ नहीं है।

हूँ दरिद्र पापों से बोझिल, छवि तेरी होती है ओझल।

कदम-कदम पर चलूँ संभलकर, फिर भी हिंसा होती प्रतिपल।

ऐसा कोई गीत सुना दो, जिसे सुनूँ खो जाऊँ मोहन।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

कर्मजाल में ।ंसा जा रहा, मुझे उबारो हे मन मोहन।

करुँ अर्चना मुझे ज्ञान दो, झोली भर दो मुझे प्यार दो।

सद्कर्मों में बढ़ता जाऊँ, हे ईश्वर तुम मुझको वर दो।

हममें कुछ सामर्थ नहीं है, जो हम तुझ तक चल कर आये।

सूनी आँखें देखे तुमको, पल-पल में आंसू ढलकाये।37

जय हो जय हो प्रभु जी तेरी, सभी प्रार्थना करते तेरी।

सब जग के आधाार तुम्ही हो, कृपा चाहते सब नर नारी।

अपना दास बना प्रभु तुम लो, भटक रहे हम पार लगा दो।

मिले चरण चाहे हम पाना, रोवे नयन सुना वन्शी दो।

प्यार हमें दो तुझे पा सके, कठिन डगर दीखे ना रस्ता।

मन्जिल आंसा बना सके हम, याद करुँ जिय मेरा रोता।

बिन तेरे कुछ नहीं जगत में, मेरे खेवट जगत रचैया।

तुमको पाकर मिल जाये सब, पार लगा दो मेरी नैया।

आंसू गिरे हमें न भुलाना, मेरे हृदय प्रभु तुम बसना।

हर अज्ञान ज्ञान को देना, तम को हटा उजाला करना।

खुद को खोकर तुझे पा सकूँ, ऐसी ज्योति जलाये रखना।

नैनन में प्रभु बस जाओ तुम, ।िर इस जग में क्या है डरना।

कौन संभालेगा इस जग में, ठोकर खाकर गिर जाते सब।

जिसके हिय में प्रभु बसते हो, कन्ट्रूल बन जाते है तब।

तेरी माया अद्भुत प्रभु जी, जाने न ज्ञानी ;षि मुनि भी।

लिये हुए पूजा की थाली, प्रभु सम्भालो तुम हमको भी।

दे भुलावा छलो ना छलिया, जीवन के मेरे तुम रसिया।

तुझे पुकारें जिय सुख पाये, हिया वसो रोवे यह अंखियां।

BY CHANDRA PRABHAKAR

ना गुन मुझमें तुझे बुलाऊँ, रोना जानू किसे सुनाऊँ।

मुझे मफ़ कर दो हम बेबस, ठुकरा मत मैं शरणा आऊँ।

तुझे खोजते खो जाये हम, माता-पिता तुम्ही हो सर्जक।

कभी बुझे ना प्यास हमारी, बढ़ता जाऊँ बन मैं साधाक।

38

तुझ चरणों को छू लेने दे, सगरे पापों को कटने दे।

दिशाहीन यह नौका बहती, तुझ पथ पर इसको बहने दे।

है तुझको सौगन्धा हमारी, गगरी ूटी मैं हूँ हारी।

कैसे तुझे मनाऊँ प्रियतम, लाज रखो हे कृष्ण मुरारी।

भीगी अंखियां धाड़के छतियाँ, कैसे पार करुँगा नदिया।

मेरे खेवट तुम बन जाओ, फ़ल हो सके जीवन घड़ियां।

प्यासा कंठ प्यास नहीं जाती, जलू विरह में मैं दिन राती।

शरण मुझे तू दे दे स्वामी, गुण गाऊँ न कभी अघाती।

नयनों से बरसात बरसती, तुझ बिन मेरी छाती ृटती।

बनो न ऐसे निर्मोही तुम, तुम बिन बुझे न जीवन ज्योति।

दर-दर घूमू तुझे न पाऊँ, कैसे मैं दिल को बहलाऊँ ?

स्वर यह नहीं उठाती वीणा, कैसे तुमको राग सुनाऊँ ?

गिर-गिर उठूं डगर न पाती, कैसे लिखूं तुझे मैं पाती ?

मुझे संभाल मेरे ईश्वर, जीवन ज्योति बुझी है जाती।

अगम अगोचर अन्त न तेरा, सारा है ब्रह्माण्ड तुम्हारा।

फ़िर भी मैं हूँ बना भिखारी, जान सका ना मैं हूँ हारा।

निशदिन तेरा नाम जपूं मैं, बता मुझे तू कित खोजूं मैं ?

हे मेरे आराधय देवता, तुझ बिन नीरस घूमूं जग में।

मेरे आंसू स्वीकार करो, ना तुम बिन अब रह पायेंगे।

मेरे जीवन दाता बोलो, तड़-तड़ क्या मर जायेंगे।

हम मन्दबुf) अज्ञानी है, बालक तेरे क्या ठानी है ?

रोते नयनों को लख तो लो, ईश्वर तू अंतर्यामी है।

पूजा के फूल न चुन पाऊँ, कैसे मैं दिल को दिखालाऊँ ?

है कंठ मेरा अवरु) हुआ, गीतों से रिझा नहीं पाऊँ।

तेरी चौखट पर पड़ा रहूँ, बस मुझको हटा नहीं देना।

थोड़े पल यह कट जायेंगे, बस मुझको दगा नहीं देना।

किस अंधियारे में सब डूबा, गाये गीत न मैं गा पाया।

ढूंढा तुझको खोज न पाया, प्यासा रहा न मैं रो पाया।

कैसे समझाऊँ इस मन को, क्यों किया अश्रु से है श्रृंगार
?

मजबूरी की गठरी लेकर, हम हैं राह में जाते हार।

तैर रहा मैं इस सागर में, मैं आँख-आँख में झांक रहा।

देख रहा मैं उन आँखों को, जिसको है जियरा तरस रहा।

पागल मनुआ गाये भी क्या, तुम बिन सब स्वर अवरु)
हुए।

सम्बल तुम ही अब कुछ दे दो, तेरी यादों में डूब गए।

बाट जोहता यह मन हारा, आँखों का पानी भी खारा।

किसके आगे पागल रोये, जख्मी दिल तन थक कर हारा।

पग रज भी मैं नहीं पा सका, रहा प्रेम से वंचित जीवन।

इन वीरानी गलियों में मैं, खोज रहा क्या भटका जीवन।

सतत साधाना रही अधूरी, जीवन की क्या है मजबूरी ?

सूखे नयना रो-रो कर के, बहता पल पर नहीं सबूरी।

मैंने गिन-गिन कर दिन काटे, तू ना आया ओ निर्मोही।

जीवन की है सांझ हुई अब, छिपा हुआ तू कित जग
माही।

आशायें धूमिल हुई सभी, उस पार क्षितिज कुछ ना दीखे।

पैरों में भी सामर्थ नहीं, मैं चलूँ कहाँ जो मुख दीखे ?

ना फूल खिले नयना बरसे, मुझसे बसन्त है क्यों रुठा ?

बेबस हूँ तू तरसा कितना, रो लूंगा क्यों इतना दीठा ?

अथक कहानी जनम-जनम की, लिख-लिख कर भी ये
जग हारा।

व्याकुल मनुआ ढूंढ रहा क्या, ढूंढ-ढूंढ कर तू भी हारा।

दुख सुनने को है नहीं कोई, किसके आगे दुख को रोना।

अपनी मुस्कराहट दे जग को, दो दिन का है यह सब
मेला।

कल क्या होगा ना जान सके, मिट सके झरोखे तेरे से।

नमन हमारा अब तुम ले लो, जाये गुजर इसी रस्ते से।

40

जय श्री राम जय श्री राम, दर्श दिखादो मुझको राम।

जन्म-जन्म से भटक रहा हूँ, तड़ रहा बिन तेरे राम।।जय।।

तुझ बिन जीना कैसा जीना, तुझे तकूँ दिन रात ओ राम।

रोये ये भर-भर के नयना, बिछुड़े मुझसे क्यों तुम राम।।जय।।

इस जगती को स्वर्ग बना दे, सबके दर्द मिटा दे राम।

हम अबोधा बालक हैं तेरे, हमको पथ दर्शा दे राम।।जय।।

SAANS SAANS MAIN

कहाँ जाऊँ न है विश्राम, दुख भंजक हे मेरे राम।

निर्बल को बल देने वाले, मुझको भी बल दे दे राम।।जय।।

कुछ ना जानूं चलता जाऊँ, मुझे सहारा दे दे राम।

कृपा दृष्टि तेरी हो जाये, बन जाये तब सारे काम।।जय।।

जनम-जनम का प्यासा मैं हूँ, तेरे खेल अनोखे राम।

तरस रहे तेरी ज्योति को, तुझको तो हम करे प्रणाम।।जय।।

जले शमा नहीं बचे पतंगा, इनकी प्रीति पुरानी राम।

शमा तुम्हारी सदा जल रही, बना पतंगा मैं नहीं राम।।जय।।

भक्त हुए सब यहाँ बाबरे, तुझको भजते-भजते राम।

मेरे नाम को क्यों न लिखता, आती हैं जीवन की शाम।।जय।।

ढूंढू तुझको कित-कित ढूंढू, कण-कण में तुम बसते राम।

आँख मिचौनी खेल रहे हो, बना हुआ जीवन संग्राम।।जय।।

;षि-मुनि हारे सब तुझ पर, लगा-लगा कर अपना धयान।

नीरस जीवन तुम रस भर दो, करो कृपा हे कृपानिधाान।।जय।।

अँखियां मेरी सूख गई है, आंसू की बरसात न राम।

साहस कर मैं तुझे पुकारुँ, दे दे पग रज मेरे राम।।जय।।

BY CHANDRA PRABHAKAR

41

पूछते है नीर मेरे, पाप क्या है पुण्य क्या है ?

चल रहा अनजान पथ पर, जानता दिल कुछ नहीं है।

हर प्रलय के बाद देखो, नित नया सृजन हुआ है।

अश्रु से पोषित धारा है, जख्म की गिनती नहीं है।

ना नियति इससे प्रभावित, हम मिलेंगे ना मिलेंगे।

गाती अपनी ही धुन में, नाचती निज ले तरंगे।

भागते सब क्षुधा पीड़ित, शान्त हो पाते नहीं पर।

देखती सब आँख जग को, यह जगत है कैसा भंवर ?

कौन जाने जिन्दगी का, कैसा होगा यह सफ़र ?

अपने देखे आँख खोली, सब गये मुझसे बिछुड़ फिर।

वेदना ले फिर रहे सब, टीस को दिल में समाये।

कौन सा वह चक्र घूमे, देख कर ना देख पाये।

कर समर्पित स्वयं को हूँ, बह रहा इक धार में बस।

कौन जाने जिन्दगी का, कैसा हो जाये सफ़र बस।

कौन गाती गीत अपना, सब दुखों से मौन हो कर।

इस नियति से हार मानी, सब ही गये सब छोड़ कर।

वासना के पंख लेकर, मैं विचरता इस धारा पर।

खोज क्या इस जिन्दगी की, अश्रु भी बस गिरे थक कर।

काश मैं उड़ता गगन में, यह तरल सी आँख लेकर।

मैं विधाता के चरण पड़, माँगता सबको सुखी कर।

42

जग के दुखड़े रो लेते हैं, पर अपने दुख ना रो पाये।

SAANS SAANS MAIN

हा विडम्बना कैसी यह, आंसू भी हम ना ला पाये।

मैं देख रहा खोया सा जग को, सूख गये आंसू क्या रोऊँ ?

व्यथा उमड़ती है जो दिल में, किस सागर में इसे बुझाऊँ ?

डगर-डगर में पग धारता हूँ, इस जग के तम में मैं प्रतिपल।

क्या वह प्रकाश मैं पाऊँगा, जिसको मैं खोज रहा प्रतिपल।

जीती है सारी यह दुनिया, निज सपनों में खो कर प्यारे।

कोई समझा दिल को लेता, कोई पत्थर पर दे मारे।

इस रंगारंग की दुनिया में, जान नहीं पाया कुछ भी।

सब समझ हुई अपनी-अपनी, क्या कहता कोई भी कुछ भी।

यहाँ ज्ञान नहीं अज्ञान नहीं, सब ही कुछ ही तो माया है।

सच जैसा सब सुपना लगता, क्या सत्य-सत्य ने पाया है ?

सागर-सागर में मचल रहा, सुख-दुख की लहरें डोल रही।

माया-माया से खेल रही, प्यासे मन को झकझोर रही।

लहरे उठती गिर जाती हैं, बस एक कहानी कहती हैं।

उठा रहा सागर मुझको है, गिरा रहा सागर मुझको हैं।

इतना ही है आश्चर्य मुझे, मैं कैसे विलग हुआ इससे ?

क्यों किया मुझे विस्मृत इसने, हुआ मैं क्यों विस्मृत इससे ?

हल नहीं यहाँ सब मिटे यहाँ, कहते सब अपनी-अपनी सी।

निर्मोही यह जगत हुआ, सब आशायें थी रुठी सी।

ले कर बहके इन कदमों को, अनजाने से पथ पर बढ़ता।

भूल चुका सुख की आशा को, है हमें किनारा नहीं पता।

माना यह जगत कहानी है, दुनिया यह आनी जानी है।

इस व्यथित हृदय के लिये एक, मैंने बस रची कहानी है।

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

मैं घूम रहा पथ राही बन, दुनिया की सुधा-बुधा को खोकर।

भूल सके ना उन बातों को, जो हृदय जलाती थी प्रतिपल।

तुम्हीं जगा दो तो जग जाऊँ, तुम्हीं सुला दो तो सो जाऊँ।

अपने बल कैसे मैं आऊँ, रह-रह कर मैं अटका जाऊँ।43

आओ ना तुम मेरे प्रियतम, तुम मुझसे प्रेम बढ़ाओ ना?

जन्म लिया मैने बसुधाा पर, तेरे बिन जियरा लागे ना।

क्यों आया था मैं इस जग में, क्यो बना सका मैं मेल नही।

पग पग पर खाता ठोकर हूँ, नहीं सम्भालते निर्मोही।

मिल पाऊँगा ना जीवन में, क्यो ऐसा विश्वास डिगाया ?

रहूं सदा तुझ पथ पर चलता, दे विश्वास मुझे यह भाया।

आंख न तुझ पर लग पाती है, बहक बहक जग में जाती हैं।

नीरस घट जग को ना भाया, निष्ठुर तूने क्यों भरमाया?

प्यार पींग अब बढ़ा मुझी से, भान रहे ना मुझको अपना।

मिट जाऊं मैं इसी डगर में, जगत हुआ मुझको यह सपना।

अविवेकी हूँ क्षमा करो तुम, हाथ जोड़ कर करुं वन्दना।

जानू ना कुछ भी जीवन में, ििर भी मैं तो करूं अर्चना।

पथ में ना मुझको भटकाना, चलता रहूँ डगर पर तेरी।

जियरा मेरा धाक धाक करता, भूल न जाऊँ डगर तुम्हारी।

बहते रहें सदा जीवन में, आंखे रहे टिकी तुझ पर ही।

सब कड़वाहट दूर भगा कर, रहूँ समर्पित बस तुझमें ही।

हसना चाहूं हंस ना पाऊं, जीवन का आनन्द न पाऊं।

मुझे बुला लों मेरे देवता, तुझ चरणों में मैं खो जाऊं।

देखी ना है सूरत तेरी, तेरे बिन मैं रह नहिं पाऊं।

BY CHANDRA PRABHAKAR

निष्ठुर भेजा तूने जग में, बहक बहक मैं हर पल जाऊं।

जीवन की मुस्कान तुम्हीं हो, जीवन की बस शान तुम्हीं हो।

कैसे मैं जग में रह पाऊं, तुम्हीं बता दो छिपे कहाँ हो।

घुटता जियरा मन नहि लागे, भगूं कहां पर भाग न पाऊं।

चल चल कर वह गिर-गिर जावे, अंसुवन में मै डूब न पाऊं।

करूँ यहां क्या समझ न पाऊँ, निष्ठुर दिल कैसे समझाऊं?

सभी विवश हो भाग रहे है, तुझ चरणों तक कैसे आऊं?

प्रियतम आन मिलो तुम मुझसे, जीवन का मैं दीप चढाऊं।

*सूखा तेल नाहिं है बाती, हाय कहूँ पर पुनः लजाऊं।*44

हरि तुम मुझसे काहे बिसरे, हाथ जोड़ मैं करुँ अर्चना।

तुम बिन मेरा जियरा भटके, तुमसे मिलने का है सपना।

तुझमें मैं यह दुनिया देखूँ, फ़िर भी पीड़ित हो चिल्लाऊँ।

मैं भी निज को तुझमें देखूँ, काहे निशदिन नीर बहाऊँ ?

प्रभु तुम मुझ को विसराना ना, तेरे पथ कैसे चल आऊँ ?

प्रीति रीति को मैं जानू ना, जियरा तुझ पर हाय गवाऊँ ?

कृष्णा-कृष्णा कर जोगन भई, जीवन से कुछ मोह न कीन्हा।

पागल मीरा विष भी पी गई, लोक लाज को सब तज दीन्हा।

मैं जग से तज लाज न पाऊँ, कैसे मैं हरि तुझ तक आऊँ ? दीन बन्धु करूणा के सागर, कृपा मिले तो तुमको पाऊँ। नीर बहाती निशदिन अँखियाँ, रूठो ना मैं पड़ता पैंया। जनम जनम से दास तुम्हारा, सेवक तेरा दे दो छैंया।

45

दीनों के रक्षक हो तुम तो, तू बता कहाँ मैं जाऊँ ?

रोती आँखें तुम ना देखो, झर-झर नीर बहाऊँ।

पागल होकर मैं फ़िरता हूँ, ना ठौर कहीं पा पाऊँ।

SAANS SAANS MAIN

तुझे पुकारुं मैं किस पथ से, मैं जान नहीं यह पाऊँ।

जख्मी क्यों करता निर्दयी, तू जान नहीं क्यों लेता ?

तेरे बिन कुछ नहीं जगत में, यह दिल ढ़ाढ़स ना लेता।

तुम बिन काहे को जीता हूँ, कृष्णा-कृष्णा कर हारा।

हार नहीं है मुझे सुहाती, प्रभु सूख गया रस सारा।

इस धारती पर जनम दिया तो, तू कुछ तो मुझको देता।

तेरे प्यार से क्यों वंचित हूँ, तू समझ मुझे तो देता।

कृष्णा-कृष्णा तुझको ढूंढू, क्यों पार नहीं मैं पाता ?

डूब जो जाता मैं तुझमें ही, यह जनम सफल हो जाता।

भीख मांगता सृष्टिचक्र यह, सब पर कृपा तू करना।

अपना क्या है हूँ अनाथ मैं, तुम नीर अर्धा ले लेना।

तेरी चौखट पर बैठा हूँ, मैं सदा रहूं बस बैठा।

तुम दुत्कार न देना मुझको, मुझसे मत होना रुठा।46

सुलगता रहा जीवन भर मैं, फिर भी तुमको पा न पाया।

कर सको क्षमा तो कर देना, अंसुअन की भेंट न दे पाया।

भटकन में हूँ भटक रहा, हाथ थाम लो तुम अब मेरा।

कौन थामता किसको जग में, गिरता है यह मस्तक मेरा।

सब फूल यहाँ पर खिलते हैं, सब फूल यहाँ खो जाते हैं।

जो खो जाये खो जाने में, वह गीत नहीं पा पाते हैं।

अपनी-अपनी धुन है सबकी, अपने-अपने गीत यहाँ है।

कहे किसे हम क्या तुम बोलो, पीड़ा का अम्बार यहाँ है।

लपट-झपट की इस दुनिया में, व्याकुल मन यह डोल रहा है।

नहीं किनारा फिर भी इसको, पाने को क्यों डोल रहा है ?

BY CHANDRA PRABHAKAR

SAANS SAANS MAIN

झांकू मैं किसकी आँखों में, लहराता पीड़ा का सागर।

तुझे सदा चलते जाना है, जीवन का यह लक्ष्य मुसाफ़िर।

हुआ आज तू मन क्यों पागल, पथरीली जीवन राहों पर।

जख्मी होकर भी चलना है, जान सके तो जान मुसाफ़िर।

सुप्त जगा कर इच्छायें क्यों, जीवन से खिलवाड़ किया है।

रहा भटकता मैं दर-दर क्यों, यह कैसा इन्साफ़ किया है ?

नीरस सारा यह जग लगता, लिखता कविता मन समझाने।

मदहोश हुआ सा जाता हूँ, इक टीस ऊनती अनजाने।

है कौन किसी का दुनिया में, सब स्वार्थ से टकराते है।

बिन स्वार्थ बूझ किसी की ना, मन को ढाढस सब देते है।

जीवन की टेढ़ी राहों पर, मैं उलझ गया पथ भूल गया।

मारग मुझको दर्शा दो तुम, हे पन्थ निवासी भटक गया।

जब पल-पल हिंसा होती है, जीवन निर्वाण हुआ ही क्यों ?

मैं समझ नहीं पाया अदृष्य को, उसको खोज रहा हूँ क्यों ?लिखना चाहूँ गीत प्रीति के, कभी नहीं पर लिख पाता।

अपनी पीड़ा को कहें किसे, जग की पीड़ा ना लख पाता।

जीवन की टेढ़ी राहों पर, फ़ुंकार रहें विषधार मुझ पर।

फ़िर भी मैं बढ़ता जाता हूँ, स्नेह सूत्र का ले बन्धान।

क्यों जन्म धारा पर लेते हैं, फ़िर विलख-विलख रह जाते क्यों?

नित अपने ताने-बाने में, इन्सान उलझता जाता क्यों ?

पल-पल बढ़ता जाता विषाद, जो अन्तःस्थल को छूता हैं।

झकझोर हृदय के भावों को, विक्षुब्धा हमें कर देता है।

एक दिशा में बहे जा रहे, पाते हैं सब वह प्रकाश।

लड़ते आपस में तब क्यों हैं, तज जीवन का श्रृंगार आज।

BY CHANDRA PRABHAKAR

पा सका तुम्हें ना पाऊँगा, यह पता मुझे जीवन में है।

मैं खोज रहा तुझको क्यों हूँ, क्यों पता नहीं मुझको यह है ?

दुख की अग्नि में जल-जल कर, बस याद तुम्हारी आती है।

अंधियारी रातों के अन्दर, एहसास तुम्हारा देती है।

सुख-दुख की आँख मिचौनी कर, तुम खूब खेलते हो भगवन।

क्या मिलता है इस क्रीड़ा में, यह जान नहीं पाया भगवन।

47

गाऊँ मिलन के गीत मैं कैसे, तुम जो मुझसे रूठ गये हो।

जीवन का श्रृंगार तुम्ही हो, नयन चुराये बैठे क्यों हो?

तुझे बसाकर ही इस दिल ने, जग में चलना सीख लिया है।

तोड़ न देना इस दिल को तुम, तुमने ही आबाद किया है।

कब से मैं हूँ भटक रहा था, मुश्किल से तुझको पाया है।

बीत गई अब दुख की घड़िया, अब बसन्त देखो आया है।

जब तक जीए साथ रहेंगे, जीवन की यह चाह हमारी।

तुझ को देख-देख जीयेगे, तुझमें छिपी खुशी है सारी।48

खोज क्या हम बाबलों की, बह रहे बस धार में है।

शब्द में उलझे हुए है, हम निकल पाते नहीं है।

दूर एकाकी खड़ा मैं, धयान में डूबा हुआ हूँ।

वासना क्या चाहती है, भागता पीछे रहा हूँ।

क्यों विलग हम धार से हैं, क्यों नहीं हम लीन होते ?

प्यास थोड़ी सी मगर, चाह है सागर को पीते।

सुख यहाँ पर चल रहा है, दुख यहाँ पर चल रहा है।

भूख की ज्वाला से पीड़ित, जग निरन्तर जल रहा है।

SAANS SAANS MAIN

कर रहे सब कुछ प्रभु, फिर भी हम करते है शिकवा।

मैं थका हूँ मैं थका हूँ, कर सको तो माफ करना।

जी दिया जीवन दिया, क्यों फिर भी मैं चिन्तित हुआ ?

गीत तेरे स्वर भी तेरे, मैं समर्पित ना हुआ।

इक सहारा बन ही जाये, तुम सुना दो गीत को तो।

टूटे खण्डर में यहाँ फिर, आ ही जाये चमक तो।

मांगता मैं हूँ समर्पण, सब समर्पित स्वयं ही है।

कर सको तो माफ करना, बस नहीं कुछ भी मेरा है।

हम चलेंगे हम चलेंगे, जग यह चलता जा रहा है।

कौन मैं बाधाक बनूँ हाँ, काफिला यह जा रहा है।

अश्रु का उपहार दे दूँ, पर नहीं यह पास मेरे।

कर सको तो क्षमा करना, है नहीं कुछ हाथ मेरे।

हैं अंधोरा ढूंढता मैं, गिर रहा पर खोजता हूँ।

और कर सकता नहीं मैं, भटकता मरुभूमि में हूँ।

है मेरी सरगम अधूरी, कर सको तो करना पूरी।

है नहीं अधिाकार मुझको, वीणा की है तार टूटी।क्या करें शिकवा किसी से, जन्म ही शिकवा हुआ जब।

अश्रु भी सूखे नयन से, मन तो बोझिल हो गया अब।

फल पकेगा और गिरेगा, यह समय का सत्य है।

फल स्वयं ना जान पाया, यह भी कैसी नियति है ?

घूमता मैं जगत में, टूटा हुआ सा साज ले।

थी अभीप्सा स्वर उठाऊँ, पर रहा असमर्थ मैं।

नृत्य करती इस प्रकृति में, स्वर मिला दूँ बहुत है।

बन सकूं बस मैं पथिक, इतना ही मुझको बहुत है।

BY CHANDRA PRABHAKAR

अदृष्य राहों का मुसाफ़िर, बढ़ता कुछ ना दीखता।

पथभ्रान्त हूँ मैं तो पथिक, यह मार्ग दुस्तर दीखता।

चाहतों के चक्र में हैं, ृंस यहाँ कितने विवश हम ?

है हृदय अब मूक मेरा, दे नहीं सकते हैं कुछ हम।

ढूंढना चाहें तुम्हें पर, उलझनों में हम घिरे।

अर्चना के पुष्प थोड़े, कैसे हम पूजा करें ?

49

पीव पुकार हुआ मन पागल, नयना झर-झर नीर बहाये।

मुझसे रुठ गये वह ऐसे, जीवन जाये वह ना आये।

कैसे निरखूं तेरी छवि को, बल नहीं निरन्तर चलने का।

तेरी रहमत का जग प्यासा, क्यों पा न सके किसने रोका?

हम तड़ रहे निर्बल प्राणी, तेरी विशाल इस दुनिया में।

आशा के सपने बिखराये, हम खोए हाय उदासी में।

मैं भूल भुलैया में भटका, क्यों निष्ठुर राह दिखाई ना।

पत्थर दिल का क्यों ले बैठा, तू करुणामय क्यों बनता ना।

जनम-जनम का प्यासा हूँ मैं, बना रहूं मैं दास तुम्हारा।

ऐसी प्यास जगा दे निष्ठुर, प्यास रहे ना भान हमारा।50

अर्चना भंजित हुई क्यों, तू बता ऐ देव मेरे।

गिर सके चरणों में न हम, रो सके न देव मेरे।

चाहूँ चलना चल न पाऊँ, क्यों रुका हूँ देव मेरे।

दान दे दो तुम दया का, हूँ भिखारी देव मेरे।

जन्म ही तुमने दिया है, तुम बने माता-पिता हो।

तेरी ममता का भूखा, क्यों नचा मुझको रहे हो।

SAANS SAANS MAIN

तुम ही जगत के ईश हो, मैं भटकती धूल हूँ।

चरण रज अपनी बना ले, मैं तो समय की भूल हूँ।

तुम ही रक्षक जगत के हो, ना मेरी रक्षा कर रहे।

हम सिसकते है बिलखते, क्यों तुम हमें विसरा रहे ?

सुधि हमारी देव ले लो, न तुम बिना जी पायेंगे।

आंसू का भण्डार दे दो, डूब इसमें जायेंगे।

वासनाओं से घिरा हूं, हे देव तुम रक्षा करों।

गीत बस तेरा ही गाऊँ, यह वन्दना मेरी सुनो।

साथ चाहूँ मैं तुम्हारा, जिन्दगी से मैं हूँ हारा।

तुम बिना जीवन नहीं यह, है जगत नीरस यह सारा।

दीखते मुझको नहीं हो, खोज फिर भी मैं रहा हूँ।

दर्द मुझको दे दिया जो, भटक उसमें मैं रहा हूँ।

हाय तड़ृन यह जगत की, देख दिल बैचेन होता।

करुणामय देव तुम हो, क्यों न तेरा दिल पिघलता।

हाथ तुम अपना बढ़ा लो, चरण में हम आ पड़े हैं।

भक्ति का वरदान दे दो, शरण तेरी आ गये हैं।

हैं नहीं कोई किनारा, दीखता इस धार में हैं।

*नाम ही तेरा सहारा, बीच बस मझधार में हैं।*51

तेरा विरह जगत में चाहूँ, वैभव में मैं भूल न पाऊँ।

क्यों वैभव के पीछे भागू, हाय मैं तुझमें रम ना पाऊँ।

इस अंधियारे जीवन में तू, मुझे प्रकाश की ज्योति दिखा दे।

करुँ समर्पित सब तुझ पर ही, हाय पतंगा मुझे बना दे।

मुझको परखो ना तुम निष्ठुर, फल नहीं मैं हो सकता हूँ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

हूँ मतिमन्द महाअज्ञानी, आंसू भी ना ला पाता हूँ।

बना-बना पथ निर्मोही तू, चलू डगर पर बस तेरी ही।

जगत प्रलोभन नहीं लुभाये, बिसरुं बस तेरी सुधा में ही।

इस विशाल दुनिया के अन्दर, भटक रहे सब नर नारी मिल।

अपनी-अपनी चाहत लेकर, माँग रहे वर तुझसे हरपल।

मांगू क्या मैं समझ न पाया, जीवन में रस ले न पाया।

तेरा यह अनमोल खजाना, भ्रम भ्रमित-भ्रमित भरमाया।

करो क्षमा तुम बल दो मुझको, करुँ अर्चना बस तेरी ही।

सोऊँ जागूँ जीवन का पल, बीते हर क्षण बस तुझमें ही।

डुबा चाहे तू मेरी नौका, तुझमें ही बस मैं रम जाऊँ।

पाप-पुण्य कुछ नहीं जानता, अपनी सुधि को मैं बिसराऊँ।

कंठ प्यास से भर जाये, बूंद न मुझको निष्ठुर देना।

प्यास बढ़ा देना बस इतनी, इसको कभी न बुझने देना।

तुम बिन नाथ अनाथ हुआ हूँ, दर-दर पर ठोकर खाता हूँ।

हे जगदीश तुम्हीं संभालों, संभल नहीं अब मैं पाता हूँ।

52

सुपनों से सजी हुई दुनिया, मैं हारा प्रभु चल-चल हारा।

ना लगा सका मैं दिल इसमें, आँखों का पानी है खारा।

तेरी रहमत का प्यासा मैं, मैं रहा भटकता जीवन में।

मंजिल न मिली रोया हरपल, भटका मैं सदा निराशा में।

झूठ सांच के ऐसा चक्र में, मैंने जन्म बिताया सारा।

तुझसे मैं क्यों रहा अछूता, जीवन हर पल तुझसे पाया।

यह होता वह होता ऐसे, हम यह करते भी वह करते।

सब जन्म गंवाया हरि के बिन, मृत्यु पथ से अब हम क्यों डरते?

सम्बल हरि का ना ले हमने, यह भूल करी ना समझ सके।

हम रहे भटकते जीवन में, संताप लिये पर रो न सके।

;तुऐं आई और चली गई, ना तेरी पगधवनि को पाया।

वीराना सा बनकर घूमा, ना तुझको क्यों मैंने पाया ?

जियरा मेरा इत उत भटके, भटक-भटक कहीं ठौर न पावे।

अविरल आंसू की गंगा में, मोंहि ढाढस कौन बधावे ?

मजबूरी का रोना रोकर, जन्म बिताया मैंने सारा।

तुम्हीं बतादो कैसे पूंजू, मन से तो हूँ मैं हारा।

रहने दे चौखठ पर अपने, रोने को रो लूंगा मैं अब।

तूने मुझसे किया किनारा, बता कहाँ ढूढूंगा मैं अब ?

दो नैनन में तुम बस जाओ, देखूँ छवि निज को विसराऊँ।

सुधि-बुधि खो यह जीवन दीपक, तुझी चरणों में प्रभु चढ़ाऊँ।

हे वर- दे वर हाय पुकारुँ, तुझ बिन यह जग मुझे न भाता।

सूख गये आँसू सब मेरे, तुम ना रुठो हाय विधाता।

थर-थर मोरा जियरा कांपे, मिलन घड़ी कब आ पावे ?

नौका मेरी डूब रही है, क्यों न इसको पार लगावे ?

जग में आया मैं भरमाया, पता नहीं मैं मंजिल क्या ?

रो-रो कर मैं क्षमा मांगता, बता कसूर यहाँ मेरा क्या ?

रज चरणों की छू लेने दे, आँखों को तू रो लेने दे।

मिटने का जो स्वाद अनूठा, वह मुझको तू पा लेने दे।

हरिभज-हरिभज-हरिभज तू मन, तू सब की चरण धूल बन मन।

टिका शून्य में शून्य ही बन, सब आशाओं को तज-भज मन।

दिन-रात भजो तज निज को मन, आंसू जो बहे बहने दो मन।

जीवन नदिया में बह भजमन, मिल बिछुड़ेंगे सब तू भजमन।

तू पाप पुण्य सब तज भजमन, सुख दुख में तज ना हरिभजमन।

तू पीड़ उमड़ती हो भजमन, अन्तस की पीड़ मिटे भजमन।

जीवन मिटता हो तू भजमन, जीवन छोटा तू भज ले मन।

जग के आकर्षण छोड़ो मन, दो दिन का मेला सब है मन।

सब स्वारथ प्रेम यहाँ भजमन, अपनी सुधि को विसरा भजमन।

चलता जा भजता जा तू मन, सब ज्ञान छोड़ कर भज तू मन।

तर्कों से टूटा भज तू मन, तू दास हरी का बन भजमन।

कुछ और न जाने तू ऐ मन, अर्पण कर हरि को भज तू मन।

बस एक सहारा है ये मन, कहिं टूट न जाये यह भी मन।

नहीं ठौर तुझे कोई भी मन, बस गाता जा तू हरि गुणमन।

तू सांस-सांस हरि को दे मन, तू बन अनाथ हरि को भजमन।

अन्तिम सांसों तक भज हरिमन, तन मिटने दे तू हरि भजमन।

निशदिन भजता जा तू ऐ मन, मौत पुकारे तब भी भज मन।

तू डूब उसी में भज हरि मन, मिट जाना है मिट जा तू मन।

हरि में जीना हरि में मिट मन, खिलना झड़ना जीवन बस मन।

हरि को अर्पित कर ले निज मन, हरि चरणों में गिर जा तू मन।

55

कभी हँसाते, कभी रुलाते, यही खेल तुम खिला रहे हो।

शरण तुम्हारी आ गये हैं, हमको तुम क्यों रुला रहे हो ?

भटकते हम हैं इस जहाँ में, नहीं ठिकाना हमको मिलता।

जख्मी हो कर ही फिर रहे हैं, सकून दिल को कहीं न मिलता।यह नाव मेरी डूबती है, पार कर दो बन कर खिवैया।

तुम्ही हो रक्षक इस जगत के, चुरा न आँखे हे कन्हैया।

भटकूँ जग में कदम-कदम पर, तेरी चौखट आ ना पाता।

कहाँ छिपे हो हे कन्हैया, न मार्ग तेरा देख पाता।

तेरी दुनिया रंग भरी है, पर ना इसमें दिल यह लगता।

खता हुई क्या मुझसे ऐसी, ढूंढू तुझको तू न मिलता।

तेरे बिना ना जिन्दगी यह, जीता क्यों मैं जग के अन्दर ?

हूक दिल में है उठ रही जो, खो कहाँ जाती हो अगोचर ?

मैंने धारा पर जन्म पाया, दीप आशाओं के जले जब।

उदास किस कोने में बैठा, अरमान टूटे देखता सब।

हूँ भी अकेला मैं यहां पर, सब साथ भी छूटे हमारे।

मुझको सम्भालों कन्हैया, किसको बताओ हम पुकारे।

चलता हूँ पर चल न पाता, तेरी डगर पर आ न पाता।

मेरी अधूरी वन्दगी प्रभु, नहीं हाय मैं रो भी पाता।

यह वंशी तेरी बज रही है, और सृष्टि भी चल रही है।

तुम्हारी करुणा की भिखारी, मैं ही क्या, यह सारी मही है।

56

हूँ भिखमंगा दूँ क्या किसको, दाता तुम मैं रो ना पाऊँ।

जीवन में है दंश अनेकों, मैं रह-रह जी को तड़ाऊँ।

बोलो प्रियतम कुछ तो बोलो, कुछ तुमसे मैं बोल न पाऊँ।

झर झर आँसू की गंगा में, हाय नहि क्यों डूब मैं पाँऊ?

हे जगदीश नमन तुम्हे है, रोता दिल यह किसे दिखाँऊ?

इस विचित्र जग के बन्धान को, तड़ूं पर मैं समझ न पाँऊ।

तेरे तो उपकार बहुत है, दिल जख्मी है किसे दिखाऊँ।

प्रबल बेग से बहे यह आंसू, बस इसमें ही मैं बह जाऊँ।

पत्थर दिल ले जग में फिरता, तुझ प्यार को निरख न पाऊँ।

रहा सुलगता जीवन भर मैं, क्या किस्मत गम गले लगाऊँ।57

मन में टीस लिये यह फिरता, प्रीतम से नेहा ना घोले।

फिर भी मैं कुछ कर ना पाऊँ, मनुआ डाल-डाल पर डोले।

तुम बता दो हे जगदीश्वर, आँख खुली जग वैभव देखा।

निज पीड़ा को घोल न पाऊँ, मिलूं सभी से सपना देखा।

जीवन की चक्की में पिसकर, जलते अरमानों को जानूँ।

किसको अपने जख्म दिखाऊँ, तू करुणा का सागर जानूँ।

रहूँ डूबता तुझमें निशदिन, मैं अपनी सुधि-बुधि को खोकर।

हे करुणामय प्रीतम मेरे, ले चल मुझे भुलावा देकर।

कैसे तुझको अर्धा चढ़ाऊँ, प्रतिपल यहाँ विवशता रोती।

अनगिनत पतंगे बलि होते, शमा यहाँ प्रतिपल ही जलती।

कैसे थामू हाथ तुम्हारा, हम है विवश यही बस जाना।

कहाँ जा रही मेरी मंजिल, हाय नहीं मैंने यह जाना।

अंधियारे में हुआ बावला, रोया प्रियतम जी भर रोया।

कर-कर मैं विश्लेषण हारा, तुझको छोड़ जगत में खोया।

भंवरा मन हर पल यह डोले, कभी इत यह कभी उत डोले।

इस मन को ना सुलझा पाऊँ, मन की टीस नहीं यह खोले।

मेरा अर्धा नहीं तुम्हें प्रिय, हो निराश तुझ पथ पर आता।

अपनी पीड़ा किसे दिखाऊँ, हरपल चलचल ठोकर खाता।

कैसे ज्ञान दीप दर्शाऊँ, हे आराधय तुम्ही बतला दो ?

इस सूनी बगिया को तुम तो, जीवन का कुछ अर्थ सिखा दो।

रुठ गई है मुझसे खुशियाँ, छोड़ विराना सा इस जग में।

मैं राह देखता रहा सदा, आये ना वह इस जीवन में।

प्यार करें किससे जीवन में, सूख गई जब जीवन सरिता।

ना मुस्कान खिले जीवन में, जब टूट चला जग से नाता।मन की व्यथा उमड़-उमड़ कर, मन में मेरे रह जाती है।

टूटे दिल में आग लगा कर, वह उसमें ही छिप जाती है।

SAANS SAANS MAIN

देख रहा था सुन्दर सुपने, भावुकता के महल बना कर।

आग लगी थी एक छोर पर, नहीं होश था अपने ऊपर।

जीवन की सब तज आशायें, भटक रहा मैं दर-दर मारा।

किसे पता कब कहाँ मिलेंगे, बुझा हुआ दिल ले मैं हारा।

आशा धूमिल मंजिल धूमिल, जीवन की सब राहें धूमिल।

इन धुंधाली राहों में मुझको, दो मुस्काहट सब कुछ धूमिल।

कांटों की राहों में मैं तो, जीवन भर बढ़ता जाऊँ।

तुझसे मुस्काहट लेकर, मैं जीवन भर ना घबराऊँ।

तू है हम ना है जीवन में, फिर भी हम समझ नहीं पाते।

आशा के ताने-बाने में, फिर-फिर हम उलझ-उलझ जाते।

तेरे गीत उठ रहे प्रतिपल, फिर भी मैं ना सुन पाता हूँ।

कैसी जीवन में विडम्बना, प्यासा पानी में रहता हूँ।

तुम ही तुम हो इस जीवन में, माँग रहा फिर भी सम्बल।

मैं छोड़ सकू अपनी नौका, मुझको तुम देना यह सम्बल।

59

मिलते सब और बिछुड़ जाते, यादें लेकर हम मिट जाते।

बनने मिटने की दुनिया में, फिर भी न मोह हम तज पाते।

निवस्त्र शून्य सी आँखें ले, धारती पर आता यह जीवन।

धारती पर ही यह खो जाता, बस उछल कूदकर यह जीवन।

ऐसा होता होता जाता, फिर भी न समझ हम पाते है।

हम अपने सुख की खातिर तो, पर दुख को भी बिसराते हैं।

भूख यहाँ पर दर्द यहाँ पर, इच्छा का अम्बार यहाँ है।

ऐसे में पागल मन पूछे, बता तेरा संसार कहाँ है ?

BY CHANDRA PRABHAKAR

रोती आँखों से जग झांके, सबके संग मिल दर्द बटाये।

तुझको करुँ समर्पित जीवन, तुझमें ही बस लय हो जाये।60

क्या मन्नत तुमसे हम मांगे, आंसू मेरे ना रुकने दो।

तुम क्षमा करो देवी मुझको, जीवन का कुछ मतलब दे दो।

सब ओर उबरती पीड़ा को लख, उड़ा-उड़ा सा जाता मन है।

धौर्य नहीं रख पाता मन हैं, गम में डूबा जाता यह है।

सब बच्चे तेरे माता है, इनकी आंखों में खुशियाँ दो।

जो भूल रहे हैं हे माता, सुर जीवन के इनको दे दो।

सिसकी को यदि नहीं सुनोगी, कैसे जग में जी पायेंगे ?

संगीत उठा नहीं पायेंगे, तड़-तड़ कर मर जायेंगे।

यदि भूल रहे पथ हम पथ अपना, तो दृष्टि हमें हे जननी दो।

आलोकित कर इस जगती को, स्वर हम सब के तुम उठने दो।

कहूँ जगत की माता तुम हो, हम पागल पथ भ्रष्ट हुए हैं।

बालक है तुम क्षमा करो हम, जग की चोटों से जख्मी हैं।

हम भटक रहे है इस जीवन में, हमको तुम हे माँ रस्ता दो।

हैं अपूर्ण स्वर मेरे जो, उनको अब तुम पूरा कर दो।

श्र)ा विहीन मैं बालक हूँ, श्र)ा मेरी पूरी कर दो।

इस अन्धाकार से जीवन को, आलोकित कर पथ मुझको दो।

तेरी करुणा के प्यासे हम, अब भटकने तुम मत दो।

अपने इस व्याकुल बालक को, अपनी करुणा का साया दो।

झर-झर झरती आंखों को, जीवन का तुम उत्सव दे दो।

हम तड़ रहे असहाय बने, माँ हमरी तुम रक्षा कर दो।

सुने नहीं तेरी पीड़ा को, फ़िर भी उसके आगे गाये।

फ़ंसी जाल में मीन तड़फ़ती, हाय तड़फ़ कर वह रह जाये।

जग की रीति नहीं पहचाने, मतलब से ही सब हैं जाने।

बने हुए हम क्यों दीवाने, बीतेगा सब हैं अफ़साने।अपने-अपने सुख है सबके, सुपने पूरे हुए कभी ना।

कितने आये गये यहाँ से, इन लहरों को बांधा सके ना।

हम खोज-खोज कर हैं हारे, मिलता न कोई ठिकाना है।

पागल मनुआ ढूंढ रहा क्या, नद को सागर में गिरना है।

नहीं यहाँ मंजिल मिलती है, बहना है बस नियति यहाँ की।

बहता जा सागर लहरों पर, मान यही मंजिल बस जग की।

चल सकता जितना तू चल ले, शिकवे भूल प्यार तू कर ले।

इस जग की रीति निराली, मुस्काहट दे पीड़ा सह ले।

कह-कह हारे कौन सुनेगा, चला यहाँ ना जोर चलेगा।

अपनी-अपनी चाहत का जग, तेरे पथ पर कौन चलेगा ?

अविवेकी बता जन्म से हूँ, है दोष बता किसका इसमें।

मैं भ्रमित हुआ सा डोल रहा, कहते तू छिपा हुआ मुझमें।

कुछ कर न सकूं कुछ ना चाहूँ, अपने पैरों चलना चाहूँ।

प्रभु दंश दिये तुमने जो भी, गिर चरणों में रोना चाहूँ।

चलना चाहूँ चल ना पाऊँ, है कौन रुकावट इस मग में।

अब अन्धाकार को दूर करो, तुम ज्योति जगा दो नयनों में।

मेरे गीतों को सुन कर यदि, आ जाये आँखों में पानी।

इनको तो बहने देना तुम, कहते हैं यह दर्द कहानी।

प्रीति रीति का बना मुसाफ़िर, इसीलिये तो मैं गाता हूँ।

विरह वेदना में जल जाये, ऐसी टीस हाय देता हूँ।

दुनिया के दुख तुम्हें संतायें, तुम याद उसे ही कर लेना।

विरह वेदना में जल-जल कर, अंसुअन की भेंट चढ़ा देना।

सुलझ-2 कर जाओ उलझ, जग से शिकवा तुम मत करना।

रो लेना प्रियतम के आगे, फिर जी हल्का तुम कर लेना।

दर्द मगर है मीठा भी है, रोती आँखे सुख देती हैं।

अपने को देकर तिल-तिल जल, जीवन मुक्त तुम्हें होना है।63

चल के मंजिल मैं पकड़ता, भागती वह जा रही है।

है तड़फ इतनी यहाँ पर, आँख मेरी रो रही हैं।

दिल घुटन ले जी रहा है, बावरी अँखिया हुई है।

तुम बिना अच्छा नहीं कुछ, मेरी मंजिल रो रही है।

लड़खड़ाते कदम मेरे, चल यहाँ पर बहकते हैं।

कुछ जतन कर दो प्रभु जी, चाह तुझमें डूबते है।

तुम सुनोगे ना जहाँ में, कौन फिर मेरी सुनेगा ?

बीतता सब जा रहा है, तुझे भी कुछ दर्द होगा।

दीप जलते बुझ रहे हैं, किस कथा को कह रहे हैं ?

मैं समझ पाया न इसको, नीर बस यह बह रहे हैं।

लेते रहे नाम तेरा, हम पा सके तुझको नहीं।

ना मिला पथ में उजाला, मैं ढूंढता मिलता नहीं।

ढूंढता तुमको फिरूँ मैं, हाथ तुम आते नहीं।

है विरस यह जिन्दगी क्यों, मधु जाम छलकाते नहीं।

64

प्रकृति यहाँ पर खेल खिलाती, नये-नये परिधान पहन कर।

SAANS SAANS MAIN

थके नयन यह शून्य निहारे, मेरे आंसू बहते झर-झर।

भाग रहे निज इच्छायें ले, कहाँ जा रहे पता नहीं है ?

किस कोने से तुझको खोजूँ, तेरे बिन सौंदर्य नहीं हैं।

मेरी आँखों में तुम झांको, जीवन का मतलब समझा दो।

पीड़ा के बहते सागर में, तुम अपनी करुणा छलका दो।

कैसे पाती को मैं भेजूँ, नहीं पता है पता तुम्हारा।

भटक रहा मैं हुआ बाबरा, ढूंढ सका न कोई किनारा।

रोए नयना तुम्हें याद कर, छोड़ गये हो क्यों करुणा कर ?

जीवन की अन्तिम सांसों तक, धयान तेरा मुझे दो यह वर।65

मृत्यु आलिंगन करेगी, पूछ कर हमसे नहीं।

जिन्दगी ने आँख खोली, आ गये पूछा नहीं।

जोर कुछ चलता नहीं है, इस नियति के सामने।

आ यहाँ सब जा रहें है, देख सच है सामने।

भागते सब जा रहे है, कौन सी मंजिल यहाँ ?

प्यास है बुझती नहीं जो, चले हारे है यहाँ ?

कल्पना के जाल बुनते, जिन्दगी बीती यहाँ।

पा सके ना पा सकेंगे, जिन्दगी लुटती यहाँ।

दुःख यहाँ है सुख कहाँ है, ले जी रहे आशा यहाँ।

हम भुलावे पाल कर ही, जिन्दगी जीते यहाँ।

हर तरु आँखे उठाकर, देखते कौन अपना ?

अश्रु आँखों से ढलक कर, कह रहे जगत सपना।

एक दुख हो तो कहें हम, अनगिनत हैं दुख यहाँ।

डूब जाये शून्य में हम, सब समाया है यहाँ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

66

अँखियां रोए कैसे रोकूं, जीवन के स्वर साधू कैसे ?

भटकन के इस जीवन को ले, तुझ तक प्रियतम पहुँचूं कैसे ?

मन उलझ-उलझ जाता जग में, सुलझा-2 कर मैं हारा।

तेरी ना ज्योति मिली मुझको, लगता मुझको यह जग खारा।

झरते आंसू को देख पिघल, करुणा का सागर कहलाता।

मैं तुझे रिझाऊँ कैसे कह, कुछ समझ नहीं मेरे आता।

तुम क्षमा करो हम निर्बल है, परिचित हम नहीं हुए तुमसे।

मेरा साया मुझसे रुठा, क्या जतन करुँ मैं अब तुमसे।

रोई आँखें तुम ना आये, जीवन को कैसे समझायें ?

*युगों-युगों से प्यास है यह, क्या प्यास लिये ही मिट जाये ?*67

किसकी मुझको याद सताये, यह जियरा क्यों ना जाये है ?

सतरंगी दुनिया में नयना, यह रिम-झिम नीर बहाये है।

कहूँ किसे कुछ समझ न आवे, नयना निशदिन नीर बहावे।

किस अँधियारे में तू रोवे, खिलता फूल सुवास लुटावे।

उस पार बुलाता है कोई, यह तन जर्जित होता जाये।

ना मिला किनारा हमें यहाँ, ना जाने यह कित खो जाये ?

मेरे सुपनों में तुम आये, चाहूँ रोकूँ पर खो जाये।

विधि से मुझको क्यों वंचित कर, नित साहस यह खोता जाये।

चल तू-चल तू पथ दुर्गम है, गिरे नीर फिर भी चलना हैं।

अंसुओं से सिंचित यह धरती, फूल इसी में फिर खिलना है।

कौन सुनेगा तेरी सिसकी, गूंज यहाँ पर खो जायेगी।

पल दो पल का साथ यहाँ है, सरिता यह फिर खो जायेगी।

कंठ मेरा अवरु) हुआ है, गाना चाहूँ गा ना पाऊँ।

उस पार लड़ी है यह अँखियां, कहना चाहूँ कह ना पाऊँ।

एकाकी जीवन है मेरा, किस सागर में डूब गये रस।

तुम्हीं संभालो जगदीश्वर, नहीं यहाँ कुछ भी मेरे बस।

सारे जग में धाड़क रहा तू, नये-नये नित खेल खिलाता।

आंसू मेरे झर-झर बहते, इन अँखियों को खूब रुलाता।

शीश झुकाये देखूँ नभ को, तेरी छवि बस नयन बसी है।

तुम्हीं संभालो हे करुणाकर, मुझमें कुछ सामर्थ नहीं है।

68

देखता हूँ पार नभ के, कौन इंगित कर रहा है।

कौन सी यह प्यास लेकर, इस जगत में चल रहा है।

अश्रु गिरते है नयन के, गिन इन्हें पाता नहीं हूँ।

पीड़ा जो दिल में छिपी है, कह उसे पाता नहीं हूँ।झांकती है आँख सबकी, खोजती क्या फिर रही है ?

हम थके अब शाम आई, देख अँखियां रो रही है।

जिन्दगी बोझिल हुई, ना गम किसी के हर सका।

मैं गम के दरिया में बहा, क्यों पीड़ा को ना पी सका।

खोजती है आँख तुझको, तुम नजर आते नहीं हो।

हम फंसे दुश्चक्र में हैं, हाय शर्माते नहीं हो।

चल रहे ले नाम तेरा, किसी जगह मिट जायेंगे।

रोते आये हम जग में, रोते ही क्या जायेंगे ?

बन्दगी स्वीकार कर लो, भीख तुमसे मांगते है।

आँख से यह नीर बहते, शरण तेरी चाहते हैं ?

अपने दर से न हटाना, अपनी लौ मैं तुम लगाना।

बीतता सब जा रहा है, तुम न मुझको भूल जाना।

69

हे ईश कृपा करना हम पर, सन्तान तेरी हम जग में हैं।

अनजान डगर चलते डगमग, आंसू को पोंछ न पाते हैं।

तू कौन खेल यह खेल रहा, रो-रो कर लेते हम हिचकी।

जियरा पल-पल में रुला रहा, क्यों ना सुनते हमरी सिसकी।

तुम छोड़ो मेरा साथ न प्रभु, चल पायेंगे न इस भव में।

हम हार गये प्रभु क्षमा करो, चरणों में सिर रख लेने दो।

भटका हूँ जन्म-जन्म से मैं, पीड़ा अपनी कह लेने दो।

यह नीर निकलते झर-झर हैं, अपनी चौखट पर आने दो।

ईश सकल है राज्य तेरा, दुख के क्यों बादल फटते हैं ?

ना हँस पाते हम रोते हैं, सन्देश हमें क्या देते हैं ?

अज्ञानी है हम पुत्र तेरे, पीड़ा का जाम पिलाते क्यों ?

हम भटक रहे इस जंगल में, ना पथ हमको दर्शाते क्यों ?

मेरी पुकार प्रभु तू सुन ले, चरणों में तू रो लेने दे।

दुत्कार नहीं बस तू मुझको, हे ईश मुझे इतना वर दे।

70

थक गये हम चलते-चलते, कित पता गिर जायेंगे ?

कौन सा पथ कैसे खोजे, जो तुम्हें हम पायेंगे।

अंसुओं से पूरित नयन हैं, तन यह जर्जर हो रहा।

छिप गये हो तुम कहाँ पर, सूर्य यह अब ढल रहा।

टेढ़ी-मेढ़ी राह में फंस, खोज ना हम पायेंगे।

पथ में दीपक तुम जला दो, ढूंढ तब ही पायेंगे।

है अन्धोरा गिर रहा मैं, राह नजर आती नहीं।

कैसे मैं तुमको रिझाऊँ, सुर मेरे बजते नहीं।

वन्दना स्वीकार कर लो, हम भटके हैं जगत में।

आंसू गिरते देखते हैं, कब मिलना हो जगत में।

इस जहाँ में तुमको खोजा, तुमको पा पाये नहीं।

हम किस जगह खो जायेंगे, न जानते कुछ बस नहीं।

आंसू का उपहार ले लो, डूबूं मैं झलक दे दो।

तुम मुझे मत भूल जाना, बस विनय मेरी सुन लो।

71

जग यहाँ सब छोड़ जाते, देखते ही देखते।

तू पता ना कित छिपा है, हम यहाँ पर विलखते।

टूटते क्षण-क्षण विखरते, रंग चाहत का भरते।

हाय क्यों तुझको विसरते, स्वप्न में हम विचरते।

हैं विवश निज भूख से हम, दे क्षमा हम पा सकें।

नीर की सौगन्धा तुमको, ना तुझे हम खो सकें।

यह जगत वैभव बुलाता, रास आता नहिं हमें।

खेल यह कैसा रचाया, छोड़ कर फिरता तुमें।

चरण रज की पा सका ना, नजरें उठा देख लो।

*अर्चना मेरी अधूरी, मेरी तुम प्रभु सुन लो।*72

झर-झर नीर गिराती अँखियां, दरशन को तरसावे।

तुझ तोड़े संग बात बने ना, हरदम मोहि रुलावे।

भटक रहे अज्ञानी बन कर, पग-पग ठोकर खावे।

पाप गठरिया शीश धारी है, कैसे नयन मिलावे।

मजबूरी का रोना रोते, बीता जीवन सारा।

भटकता मैं तेरे प्यार को, विसरा ना संसारा।

भटक रहे हम क्षमा मांगते, कुछ भी ना तू बोले।

तुम बिना मेरे परमेश्वर, कैसे निज को तोले।

निशदिन तेरे गुण हम गाये, यह वर हमको देना।

नदिया सागर में लय होवे, तुझे न भूले नैना।

73

जियरा तुम बिन भटक रहा है, मिलूं श्याम मैं तुमसे कैसे ?

अँखियां नीर बहाये हर पल, धीरज मन को दूं मैं कैसे ?

ढूंढू तुझको ढूंढ न पाऊँ, अंधियारे में मैं खो जाऊँ।

टीस जगाये रखना प्रियतम, पल ना मैं तुझको विसराऊँ।

जियरा मेरा धाक-धाक धाड़के, नैना मिलने को हैं तरसे।

जले यहाँ कोई ना देखे, देखूं सावन भी न बरसे।

विरहाग्नि में भस्म हुई ना, नयना रोये हाय थके ना।

देखें पल-पल बाट तुम्हारी, क्यों तुम बिन जियरा जाये ना।

थका हुआ ना कोई किनारा, बना नहीं क्यों मेल हमारा।

झड़ी लगाई इन नयनों ने, ले शरणागत कर न किनारा।

बु)हीन अज्ञानी हूँ मैं, जग की रीति न जानूं हूँ मैं।

सूजी आँखे रोते-रोते, डुबा भंवर में क्या जीने में।

तेरे बिन जग में डर लागे, नयना रोये जग यह हाँसे।

रीति बतादे तुझे मिलूँ मैं, मोहि नहीं तू जग में ;ाँसे।74

चल मन उड़ चल पार गगन के, घबराए मन बिना मिलन के।

रोएं उन बिन आँख न खोलूं, कैसे गाऊँ गीत मिलन के ?

पिव-पिव की यह रटन लगावे, मिलन बिना यह जिय झुलसावे।

अंखिया निशदिन नीर बहावे, मोती ढुलके भेद न पावे।

जिय की जलन न मिटने पावे, बहलाऊँ मन बहल न पावे।

निर्मोही छलिया तू बन कर, छले मुझे हरपल भटकावे।

भीगी आँखों को देखा ना, शून्य-शून्य में हो न सका।

शून्य समाधि लीन रहा, तेरी गरिमा को छू न सका।

जीवन की अन्तिम घड़ियों में, तेरे कूंचे में सोयेंगे।

लो प्यार तुम्हारा मिला हमें, ना जागेंगे ना रोयेंगे।

75

कितने रस्तों से गुजर-गुजर, आये तेरे दरवाजे पर।

अब भी यदि पट बन्द रहा तो, मर जायेंगे हम रो-रो कर।

आये हम हैं कहाँ जा रहे, निहार रहे नयन शून्य में।

नहीं भेद कुछ भी मिल पाता, खो जाते सब इसी शून्य में।

छिपे कहाँ हो घट-घट वासी, हम तो हैं प्रभु तेरी दासी।

अपनी करुणा को बरसा दो, जन्म-जन्म से मैं हूँ प्यासी।

प्यारे मोहि सम्बल तुम दे दो, चलती हूँ मैं ठोकर खाती।

उठने की सामर्थ नहीं अब, गिरुँ कहाँ मैं नहीं जानती ?

;षि-मुनि जप-तप कर हारे, रो भक्तों के नयना हारे।

तू समाधि में मगन हो रहा, िर भी तेरी प्यास पुकारे।76

आँखों के नीर बरसने दो, कहते कुछ इनको कहने दो।

रुठ नहीं जाओ तुम प्रियतम, यादों में तेरी मिटने दो।

यह जीवन सारा बीत गया, मैं कुछ भी ना कर पाता हूँ।

SAANS SAANS MAIN

बहते आंसू मेरे झर-झर, इनका ही अर्घ्य चढ़ाता हूँ।

आशाएँ बन-बन कर बिगड़ी, तड़ा जग का मैं खेल बना।

आंसू यह बहते रहे सदा, दुख की पूछे यह स्वप्न बना।

हरपल मैं तकता रहा सदा, तुम ना आये निष्ठुर मेरे।

बीती जाती यह शाम यहाँ, ऐसे ही तुम बिन कहीं गिरे।

देखो क्या दोष हमारा है, संग तूानों के बहते है।

देखो मेरी मजबूरी तुम, हम विवश हुए गिर उठते हैं।

गिरते आंसू को तुम देखो, ना मेरा अब उपहास करो।

हम मिट ना जायें तूां में, कुछ तो तुम मुझसे प्यार करो।

प्यार भूख ले चला निरन्तर, मैं ले पाया ना दे पाया।

मरुस्थल ऐसा बना दिया, करके तूने क्या कुछ पाया।

पाने खोने का खेल यहाँ, पकड़े किसको सब जाता है।

निज को संभाल ना हम पाते, रेला पीछे से आता है।

स्मृतियों के बादल घूमें, उसमें ही हम तुझको ढूंढे।

गहरा अँधियारा न दीखे, पा सके किरण ंिर भी ढूंढे।

टूटी-ूटी नौका मेरी, हम नदी को कैसे पार करें।

यह डूब रही है भंवर बीच, बस तू ही अब उ)ार करें।

निशदिन मैं हूँ नीर बहाऊँ, ंिर भी तेरा पता न पाऊँ।

वरषे सावन प्यासी आँखे, इस मन को कैसे समझाऊँ ?

जियरा पी-पी की धुन गावे, मिलने की वह आस जगावे।

बेदर्द मोहि नाच नचावे, रोवे अँखियां कुछ न सुहावे।छोड़ मोहि तू कहाँ छिप गया, जीवन सूरज-हाय ढल गया।

थर-थर कांपे आस लगावे, तेरे बिन सब हाय लुट गया।

मुक्त नहीं क्यों मैं हो पाऊँ, काली रात न सुबह हुई है।

BY CHANDRA PRABHAKAR

कर्मों के बन्धान है इतने, कैसी यह जंजीर बंधी है।

थका हुआ तुझ ओर निहारुँ, जाता जीवन तुझे पुकारुँ।

आओ-आओ अब सुधि ले लो, चाह यही बस तुझे निहारुँ।

भूला पथ मैं भटक रहा हूँ, तुझ दर्शन को तरस रहा हूँ।

शुभ पथ तुम मुझको दर्शा दो, लिये चाह मैं घूम रहा हूँ।

अज्ञानी हूँ बालक तेरा, तुम बिन न हो कभी सबेरा।

रोऊँ देखूँ तुझको ईश्वर, मिटे सभी जीवन का ेरा।

77

दुख जग का न कोई सताये, नित अपने में डूबत जाये।

क्षण भंगुर है खेल यहाँ का, काहे इसमें प्रीति लगाये।

ेंक रहे सब अपनी पीड़ा, तू भी उसमें शोक मनाये।

समझ बाबरे दिन दो का तू, ना जाने िर कित को जाये ?

रो ले रो ले जी भर रो ले, अनमोल मिलेंगे आंसू ना।

उन चरणों में अर्पण कर दें, रहना कुछ इस जीवन में ना।

यही तपस्या सोच समझ मन, भूख प्यास और रोग यहाँ है।

सब सह उससे नेह लगा ले, पीड़ा है अपमान यहाँ है।

मर्म न जाना इस जीवन का, पत्ते सा यह उड़ता जाये।

हूँ अज्ञानी जानूं कुछ ना, बस जियरा यह रोता जाये।

माँगू क्या प्रभु मांगू तुझसे, भीख आँसुओं की तू दे दे।

छिपा रहा तू छिपा रहे तू, डूब आँसुओं में जाने दे।78

मन उड़ता कहिं ठौर न पावे, कैसे हम इसको समझावे?

हरी भजन से दूर हुआ यह, जगत कीच में यह उलझावे।

तुझ दर्शन को कैसे आऊँ, कैसे तेरा धयान लगाऊँ?

दुख पाऊँ मैं ंसता जाऊँ, विषयों से ना धयान हटाऊँ।

करो कृपा हे जग के स्वामी, भवसागर में ंस जायेंगे।

हम तो है पूरे अज्ञानी, बिना कृपा ना चल पायेंगे।

कैसे धीरज दूँ मन बोरा, बना हुआ क्यों इतना रुखा ?

बहा जाता समय है थोड़ा, अश्रु नहीं आँखों का सूखा।

सब ;षि मुनि हैं धयान लगाते, तुझसे ही वह खुशियां पाते।

होठों को मुस्काहट दे दो, तुझको भूले खाक छानते।

तुझ चरणों में डूब सकूं मैं, पूजा करे आँख का मोती।

बिता दिया यह जीवन सारा, खोती जाये हमरी ज्योति।

तेरे ही हम नित गुण गायें, तुझमें ही आनन्द मनायें।

भूल जगत की विषय वासना, तुझमें ही बस लय हो जाये।

जीवन का क्या लक्ष्य न जाना, बना हुआ बस मैं दीवाना।

तेरे इंगित से सब चलता, भूल गया पथ हूँ अनजाना।

किसे सुनायेंगे हम पीड़ा, दुर्गम राह भटक जायेंगे।

मेरे प्रभु ना निष्ठुर होना, रह-रह आंसू ढलकायेंगे।

पूजा को स्वीकार करो तुम, भूलों को सब मा करो तुम।

नजर उठा कर देखो अपनी, जीवन में संगीत भरो तुम।

चल-चल कर हम तो हार गये, दीदार न तेरा कर पाये।

कैसे खोजूं हे ईश बता, नैना मेरे जी भर रोये।

अज्ञानी मैं तो भटक रहा, तुम ज्ञान पुंज कहलाते हो।

जो अंधियारे को चीर सके, दे किरन मुझे तरसाते हो।पल-पल अँखियां नीर बहाये, तुमको जान नहीं हम पाये।

तेरी रहमत का जग प्यासा, तू ही मेरी प्यास बुझाये।

अँखियां तेरी बाट निहारे, छिपा कहाँ न समझ यह आये।

पतझड़ में सब बीत गया है, कब वसन्त देखूँ यह आये।

बरसात हुई नयना रोये, पर खेत न सिंचित हो पाया।

ना जान सका लेखा अपना, कर्मों का था कैसा साया।

हम तरस गये तुम ना आये, जीवन में दीप जले कैसे ?

अंधियारे से डर लगता है, पायें प्रकाश को हम कैसे ?

निर्बल हैं समझ बहुत छोटी, तकते तेरे दरवाजे को।

तू आँख उठाकर देख जरा, चल सकें हमें दे साहस को।

यह नौका मेरी डूब रही, तुम इसको पार लगा देना।

बंजर यह मेरा खेत पड़ा, तुम कृपा इसे अपनी देना।

80

हरि से मिलाओ हमें, हरि मिला दो।

कैसे पाये उनको, तुम बता दो।

ढूंढू दीखे नाही, पथ दिखा दो।

प्यासा भटके जियरा, जल पिला दो।

युग-युग से खोज रहा, नहीं पाया।

हाय भटकता जग में, हूँ भरमाया।

उससे मिला दो हमें, ना मिटा दो।

पतझड़ में कोई तुम, पुष्प खिलादो।

बरसे अँखियां मेरी, दया दे दो।

भूलूं उसको नाहीं, हरि मिला दो।

पांव पडूं मैं तेरे, जीय ले ले।

कुछ भी नाहीं उस बिन, जगत मेले।81

तुम हमको नहीं मिले प्रियतम, जीवन छूंटा सा जाता है।

होंगे विलीन अन्धाकार में, कहा नहीं कुछ भी जाता है।

आयें हैं अजनबी यहां हैं, कहां जायेंगे पता नहीं है।

रो रोकर जीवन पूरा कर, नहीं मिलोगे पर आशा है।

जीवन के हम दिर्द लिये हैं, कहते भी हम शर्माते ।

ऐसे निष्ठुर जीवन को दे, दीनानाथ तुम्हीं कहलाते।

क्षमा करो हे दीनबन्धु तुम, दीन हुए हम बन्धु मिला ना।

तड़-तड़ कर यह दिल हारा, तेरा हमें दिदार हुआ ना।

आओ-आओ-आओ-आओ, इस जग का तुम ताप मिटाओ।

सिलग रहा जग तपस के अन्दर, शीतल जल तुम ही बरसाओ।

मूरख हम अज्ञानी हम हैं, हमें धार्म का पाठ पढ़ाओ।

हमसे चला नहीं जाता है, सम्बल हमको तुम दे जाओ।

नतमस्तक हूँ तेरे आगे, अंधियारे में नहीं दीखता।

तू प्रकाश की ज्योति जला दे, तुझ चरणों के लिये तरसता।

निष्ठुर ना तुम निष्ठुर होना, जीवन का कुछ मतलब देना।

नाच रहा सारा जग यह है, करुणा तुम करुणामय करना।

82

आ गई मंजिल मेरी अब, आंसू भी सूखे नयन के।

थक चुका हूँ इस सफ़र में, हाय क्या दूँ दर्द दिल के ?

लड़खड़ाती जिन्दगी यह, मैं गिरा सा जा रहा हूँ।

गीत में बस है रुदन ही, मैं सुना तुमको रहा हूँ।

है चुभन वह कौन सी जो, आंसू से कहती कहानी।

कौन सी आहट को लेने, बन गई वह वियोगनी।

किस दिशा में जा रही है, अज्ञात यह नौका मेरी।

*रज चरण ना पा सके क्यों, अर्चना मेरी अधूरी।*83

ओम निरन्जन ओम निरन्जन, करदे सबके दुख का भन्जन।

तू पालन सब जग का करता, तू सून ले अब हमरा क्रन्दन।

सब जग के आधार तुम्ही हो, जग के पालन हार तुम्हीं हो।

महिमा गावे यही संसार, तुम्हीं हो सभी के सृजन हार।

सूर्य, चन्द्र और तारा गण, लगा रहे है तेरी ेरी,

सारा जग यह बना भिखारी, अलख जगाये सारे तेरी।

जड़-चेतन सब में तू ही है, तेरी महिमा अपरम्पार।

तेरे बिना नहीं कुछ भी है, जानता है सारा संसार।

निशदिन तेरे ही गुण गावे, यह मेरे दिल की पुकार है।

नाचें-गावें खुशी मनावे, तू ही सबका तरनहार है।

खुशियों की तुम वर्षा कर दो, तुम्हारे गुण गाये संसार।

पीड़ित जग की पीड़ा हर लो, दुखियों की तुम सुनो पुकार।

तेरा ही यह चक्र चल रहा, नहीं तेरा है पारावार।

जीना मरना यहाँ चल रहा, कर-कर धयान थका संसार।

84

तेरे संग संजोई आशा, पर तू निकला निर्मोही।

बता तुझे मैं कैसे बांधू, बसा हुआ है घट माही।

निशदिन तेरा पंथ निहारु, रो रोकर तुझे पुकारुँ।

तुझ बिन अँखियां सूज गई है, बता मुझे कैसे जीऊँ ?

छिपा हुआ तू जनम-जनम से, आँख मिचौनी खेल रहा।

हर कण जग का घूम रहा है, परिक्रमा को लगा रहा।

कैसे मैं मन को समझाऊँ, रोए नयना किसे दिखाऊँ ?

मन यह मेरा हुआ बाबरा, धीर नहीं मैं दे पाऊँ।85

तन्हाई में पड़ा अकेला, नभ के तारों को गिनता हूँ।

आंसू की गंगा में निशदिन, मैं भी स्नान किया करता हूँ।

भटकी मेरी मंजिल मुझसे, नहीं किनारा कोई पाया।

किसे सुनाऊँ पीड़ा अपनी, मैं अपना दिल खोल न पाया।

देख रहा उस पार क्षितिज के, बुला रहा है मुझको कोई।

कौन कंट मार्ग में उलझा, सता रहा है मुझको कोई।

दिल मेरा धाक-धाक करता है, किस पीड़ा को कहना चाहे ?

इन अंधियारी रातों में यह, रोना चाहे रो ना पाये।

कैसे कहूँ हाय पीड़ा यह, कंठ मेरा अवरु) हुआ है।

इस काली छाया के भीतर, ज्ञान मेरा सब लुप्त हुआ है।

भूल-भूलैया में भटका, किस पथ पर ले जाना चाहे।

तू कहाँ छिपा ओ निर्मोही, क्यों मुझसे छल करना चाहे ?

शिकवों का भंडार लिये हम, जीवन की सांसे गिनते हैं।

मजबूरी का ले हम रोना, तुझसे विलग रहा करते है।

मुझे थाम लो मेरे भगवन, हम असहाय न चल पाते है।

इस जीवन को हम धारण कर, गुणगान नहीं कर पाते है।

86

कैसे गाऊँ मैं गीतों को, दिशाहीन मैं फिरता हूँ।

मुझे थाम लो मेरे भगवन, नहीं संभल मैं पाता हूँ।

मेरी आँखों में झाकों तुम, अश्रुहीन यह आँखें है।

पत्थर दिल यह लेकर फिरता, नीरस सारा जीवन है।

दुनिया तेरी बहुत सुहानी, फिर भी यह दिल ना लगता।

क्या बैचेनी लेकर आया, सूना जीवन यह लगता।

प्रेम हृदय में भर दो प्रभु, आँखों में आंसू दे दो।

मैं करुँ समर्पण तुमको प्रभु, जीवन की सुधि को ले लो।87

आओ तुम कृपा करो प्रभु, ज्ञान का वरदान दे दो।

डूब जाऊँ बस तुझी में, भान तुम मेरा मिटा दो।

तेरी दुनिया है सुहानी, मैं सजा इसको सका ना।

क्या करें शिकवा किसी से, दिल हमारा ही रहा ना।

वन्दना स्वीकार कर लो, अश्रु भी सूखे नयन के।

तुम सहारा नाथ दे दो, हम भ्रमित जग में भटकते।

चल सकेंगे या गिरेंगे, हैं यहाँ अज्ञात सब कुछ।

किस ललक को मैं लिये हूँ, देखता पर व्योम भी चुप।

आँख का इक नीर बह कर, है कथा अपनी सुनाता।

मैं सुनाऊँ किसको पीड़ा, सब रुदन यह व्यर्थ जाता।

हाय कैसा पथ बना यह, सब तरु मैं रुदन पाता।

पोंछ पाता मैं न आंसू, स्वयं उसी में डूब जाता।

जी रहा हूँ चल रहा हूँ, भूल कर दिल की तपस को।

मैं कहाँ ढूंढू तुम्हें प्रभु, जानता हूँ मैं न मग को।

88

तक-तक आँखें यह हार गई, तुम ना आये मेरे भगवन।

ले सको हमारी सुधि ले लो, अस्तांचल में जाता यह तन।

शूलों से भरा हुआ यह मग, चाहत से भरा हुआ यह जग।

आवाज तुम्हें कैसे मैं दूं, भूला अँधियारे में मैं मग।

SAANS SAANS MAIN

क्यों समझ हुई मेरी बौनी, है जली विवशता में होली।

रोने को कितना ही रोए, निर्मम तू ना आँखे खोली।

टूटा सा साज संवार रहा, तेरे स्वागत की तैयारी।

स्वर उठे गिरे, यह पता नहीं, सम्बल तेरा तुझसे यारी।

तेरी आँखों में झांक रहा, क्यों विसरा दी करुणा अपनी।

बन सका न मन्दिर का दीपक, किस्मत कैसी मेरी करनी।

मेरे चाहे क्या होए है, जो वह सोचे सो होए है।

ना सोच पता हमको उसकी, जीया हरदम बस रोए है।

हरदम है हम ठोकर खाते, इंगित हम समझ नहीं पाते।

बेबसी हमारी ऐसी है, कठपुतली बन हम रह जाते।

जग में ऐसे हम घूम रहे, मिले किनारा कोई हमें।

जनम-जनम से भटक रहे हैं, थाम रहा नहीं कोई हमें।

निष्ठुर मैं प्रीति करुँ कैसे, तू विधाा मुझे बतला तो दे।

या आंसू का झरना दे दे, बस डूब उसी में जाने दे।

पथ तेरा कैसा ईश्वर है, मिल-मिल कर यहाँ बिछुड़ जाते।

सुपने बुनते-बुनते जग में, सुपने से जग में खो जाते।

चाहत से भरा हुआ प्याला, इसमें किसने विष को डाला।

हरियाली सुन्दर धारती पर, दुख पीड़ा को क्यों रच डाला।

पथ तुम्ही दिखादो चल पाऊँ, अन्तहीन मैं गिरता जाऊँ।

किसका थामू हाथ बता दो, नहीं किनारा कोई पाऊँ।

कैसे धाीरज दूँ इस मन को, तन से हारा मन से हारा।

जल जल कर भी जल न पाया, नियति नहीं क्या कोई

BY CHANDRA PRABHAKAR

किनारा।

ढूंढ़ा तुझको ढूंढ न पाया, अंधियारे में मैं भरमाया।

इन सूनी आँखों में प्रभु जी, दर्श नहीं तेरा कर पाया।

90

कोई सोवे कोई जागे, पागल मनुआ काहे रोवे ?

प्रीति रीति की राह अनोखी, शीश दिये ना कुछ भी जावे।

आँखों से आंसू ढरकावे, काहे अपनी व्यथा सुनावे ?

ऊन रही यह सारी दुनिया, क्यों ना मधु का जाम पिलावे ?

पिव की याद करे औ रोवे, मन को कैसे मैं समझाऊँ ?

वह मुख से कुछ भी ना बोले, सिसक-सिसक कर मैं रह जाऊँ।

इसी शून्य में घूम रहा सब, बनना मिटना खेल यहाँ हैं।

याद करो बस उस प्यारे को, आंसू का उपहार यहां है।

91

जब सूख गया निज का ही रस, क्या दोष दूसरों का बोलो।

कुदरत ने बिछा दिये काँटे, सुख मिले कहाँ से तब बोलो।

ना दोष तुझे हम देते हैं, अपनी किस्मत को रोते हैं।

सौगन्धा प्यार की ली हमने, अर्पण अपने को करते हैं।

हरपल मुझे भुलावा देकर, खूब रुलाता है निष्ठुर।

जी लेंगे जैसा तू चाहे, हम टूट चुके हैं ओ निष्ठुर।

मेरी सभी दुआयें ले ले, जो कुछ भी है वह सब तेरा।

जन्म-जन्म का प्यासा मैं हूँ, बस इसी प्यास ने अब घेरा।

मेरे आंसू का करो आचमन, तुम अहंकार को तृप्त करो।

आँख मूंद लो मुझ पीड़ा का, चाहत को अपनी पूर्ण करो।

92

जीवन में एक सहारा ले, इस अनजानी पगडण्डी पर।

मैं मन को समझाता प्रतिपल, आंसू बहते मेरे झर-झर।

तुम छिपे कहां कैसे खोजूं, भटकन का जीवन दे डाला।

यह भूख प्यास से पीड़ित तन, मन को चाहत से रंग डाला।

चल कर गिर कर ठोकर खाते, चहुँ ओर घूरते हैं प्रतिपल।

काली अंधियारी रातों में, हम खोज रहे तेरा सम्बल।

तू हमें नचाता है प्रतिपल, छिप-छिप कर आँख मिचौनी कर।

हम नाच रहे हैं विवश यहाँ, क्या रस तेरा इसमें निष्ठुर।

ले चल चाहें जैसे मर्जी, चरणों में गिर रोने देना।

स्वीकार करो आंसू मेरे, इनको बस मत रुकने देना।93

तेरी कृपा बिना ईश्वर, जगत में चल न पायेंगे।

ढुलकते यह अश्रु मेरे जो, तुझे कैसे चढ़ायेंगे ?

दीखे नहीं है डगर लम्बी, कह दो कैसे पायेंगे ?

चढ़ेंगे अश्रु ना ही तुमको, इसे फिर कहाँ चढ़ायेंगे ?

तुझे हम खोजते ही फिरते, प्रभु अब तुम मिलो हमसे।

यह जिन्दगी हो चुकी बोझिल, जिय मिलने को है तरसे।

यहाँ मिटते हैं हर क्षण हम, न तुम बिन अब रहा जाता।

यह आंसू गिरते धारती पर, हमें लख लो पिता माता।

नमन हम करते तुझे निशदिन, बितायें याद में हरपल।

डरते है रुठ नहीं जाओ, बुझता है मेरा यह दिल।

विरह के यह गीत उठते हैं, हरि तुमको ही देखे हैं।

तुम सुना दो बांसुरी की धुन, यही बस आस करते हैं।

चली जाती है यह जिन्दगी, जलधा में कहाँ डूबेगी ?

जायेंगे दर्द लिये क्या हम, यही करुणा कहायेगी।

रजा में तेरी रहे राजी, तुझे रटते रहे हरदम।

पड़े ना ही दर्द यह ीका, निकल जाये हमारा दम।

94

बीते यह पल हरदम तुममें, तुझे ढूंढते हम खो जायें।

होंगे न हम होगा ना गम, दूर शिकायत सब हो जाये।

ढूंढे तुझे खेल है प्यारा, करुँ जतन मैं जग से हारा।

याद तुझे कर नीर बहायें, चाहे यह तन डूबे सारा।

मिलना मत नहिं प्यास मिटाना, कितना चाहे जिया जलाना।

मिटे याद में हरदम तेरी, भूंलू न इसमें ही सुलाना।

तू है शलभ पतंगा बनूं मैं, मुझे समा ले मुझे मिटा दे।

गोद तुम्हारी आ जलूँ मैं, तुझमें मिटूं भुला सब कुछ दे।

देखे नैना आती रैना, सुन ले ईश्वर मेरे बयना।

ज्ञानी नहीं रिझाऊँ कैसे, आता मुझको केवल रोना।95

प्रभु शरण तेरी हम आये, पथ को आलोकित कर देना।

अज्ञानी बन घूम रहे हम, प्रभु ज्ञान दीप को दर्शाना।

न कोई किनारा दीख रहा, चहुँ ओर दीखता पानी है।

नैया को पार लगा देना, कांपती यह जिन्दगानी है।

नयनों में आंसू मेरे हैं, पास नहीं कुछ दे पायें।

बस करें आरती हम तेरी, चाहें यह बगिया लहराये।

तुमको भजें और याद करें, मन्जिल को सरल बनाते हो।

तुम ज्ञानपुंज हो शक्तिमान, सारे जग के संचालक हो।

गिर-गिर कर तुझे पुकार रहे, कठिन डगर है पथ में कांटे।

पीड़ा हरो मेरे बांके अब, नाम तुम्हारा है दुख काटे।

चाहत के मेले सजे हुए, हरपल इसमें है ठगे गये।

तेरी बन्शी की धुन सुनने, इस जीवन में हम तरस गये।

ले खाली झोली द्वार खड़े, बिन कृपा कभी ना फूल खिलें।

चरणों में जगह हमें दे दो, बुझता दिया फिर खूब जले।

कितना इस जग में दर्द छिपा, तुम बिन है शांति नहीं मिलती।

जीवन की अन्तिम घड़ियों तक, जो भजे तभी किस्ती तिरती।

96

कितना दर्द छिपा है जग में, फिर भी जीवन है चलता।

हिया छिपाये इस पीड़ा को, नीर आंख का सब कहता।

भई बाबरी अंखियां कह-कह, कथा खतम नहिं हो पाई।

जीवन की अंतिम घड़ियों तक, हरि बिन शान्ति नहीं पाई।

बीत रहे जीवन के यह पल, इनको तू मत विसराना।

हरि को भज लेना इस जग में, उसके ही घर फिर जाना।

दर्द तुम्हारे मिट जायेंगे, उस हरि को बस तू जपना।

हिय में हो विश्वास उसी का, फिर काहे जग से डरना।

सुमर उसे जीवन में हरपल, यादें उसकी भर लेना।

दीप ज्ञान का जल जायेगा, तम को दूर भगा देना।97

आंसू गिरते झर-झर मेरे, लखे न कोई किसको टेरे।

मतलब की यह सारी दुनिया, हरि भज ले मन मिटते घेरे।

चलते-चलते हम थक जाते, पर अन्तस को ना लख पाते।

मृगनाभि वसी कस्तूरी पर, ढूंढे जग में ठोकर खाते।

नयनों में मूरति श्याम बसे, सब पाप जगत के यही कटे।

कर्मों के बन्धान छूट चले, हरपल जो है हरिनाम रटे।

अज्ञान हरो मेरे भगवन, अन्तस में दीप जला दो तुम।

यह नयन निहारें बस तुमको, तब मिट जायें जग के सब गम।

तेरे पथ पर चलते जायें, सांसे तुम्हें जपती जायें।

तेरा ले विरह गिरे आंसू, कुछ और नहीं हमको भाये।

हम टूटे गये बस रोते है, अनजान डगर पर चलते हैं।

तुम हमें संभालों हे भगवन, हम अन्धाकार में जीते हैं।

मेरे आंसू गिरते टप-टप, तेरी करुणा चाहें हरपल।

ना कर अनाथ मुझको सर्जक, मैं हार गया ना कोई बल।

98

वियवान में तुम कहाँ छिप गये हो, मेरे ईश हम पुकारें तुझी को।

भूलो ना हमको डूबे गमें हैं, जियरा ना लगता खोजें तुझी को।

तुम्हारें बिन जग वीरान मेरा, टूटे ऐसे ना दीखे सबेरा।

झर-झर गिरते है यह नीर देखो, पग हम पाये न दीखे अंधोरा।

न भटका हमें चले तेरे पथ में, लगता नहिं दिल तड़ हिय उठती।

मिटते यहाँ बस पुकारें तुम्हीं को, आशा पल-पल में नित जाल बुनती।

सुरतिया तेरी हमको है भाये, मिल जाये मुझको तेरा सहारा।

कठपुतली हम नचा जैसा चाहे, लहर ना रहे जलधा रि तो सारा।

कहाँ से आये कहाँ जा रहे हैं, संभलता नहीं गमें बोझ दिल का।

पुकारें तुमको जीवन के कर्ता, गगन भी चुप ना पता है कहीं का।99

राम मिला दे राम मिला दे, पांव पडू मैं राम मिला दे।

भूल गया पथ कहाँ गया रब, खोई मेरी प्रीति जगा दे।

प्रभु बिन बीता जाये जीवन, बरसे नयनों से है सावन।

विरह तुम्हारा मुझे सतावे, ना हो निष्ठुर ऐसे मोहन।

जनम जनम से घूम रहा हूँ, प्यार तुम्हारा तरस रहा हूँ।

आंख उठा कर मुझको देखो, जीवन से मैं हार गया हूँ।

सारे जग के तुम हो पालक, हम तो प्रभु है तेरे बालक।

खोई डगर हमें दिखला दे, मेरे जीवन के तुम सर्जक।

कण कण में तुम छिपे हुए हो, फिर भी पता न पाता तेरा।

सारे जीवन की खुशियाँ हो, कैसे पाऊँ होये सबेरा।

नीर बहे तू क्यो ना आये, रोता जीवन किसे दिखायें?

माना कुछ भी पास नहीं है, बता यहाँ हम कित को जायें ?

करो कृपा कट जायें बन्धान, सुन लो मेरा प्रभु तुम क्रन्दन।

सदा रहे तेरे गुण गाते, पार करो तुम मुझको मोहन।

छवि वस जाये मोहन तेरी, पलक उठा न जग को देखूँ।

बीती सदियां भूल गये क्यो, हिय में तुमको हरपल निरखूं।

सांस-सांस में राम-राम हो, सुनने को वन्शी की धुन हो।

सब वैभव फीके पड़ जाते, पायें तुमको दुख भन्जक हो।

हमें बुला लो खड़े द्वार पर, रूठो ना मेरे करूणाकर।

झोली खाली अंसुअन भीगी, बीत न जाये शाम कही फिर।

टप-टप गिरते आंसू खोजें, आया हूँ मैं शरण तुम्हारी।

तुम बिन मोहि चैन ना पड़ता, लाज रखो मेरी गिरधारी।

BY CHANDRA PRABHAKAR

जिया मेरा हुआ है भारी, जल-जल राख हो रही सारी।

तुझ याद में राधाा खो गई, मीरा ने भी सुधाी विसारी।
हम तो बालक है अज्ञानी, दे दे भीख हमें तू दानी।

तुम्हारी बगिया खिले प्रभुजी, नयन गिरावे झर-झर पानी।

पथ को देंखे तुझे पुकारे, डूब रहे हम पार उतारो।

मेरे प्राण पियारे रसिया, करो दया तुम हमें निहारों।

चले यहाँ हम गिर-गिर जावें, तुम बिन कुछ भी रास न आवे।

ऐसी प्यास जगा दे मोहन, बन चकोर न आंख हटावे।

पाप पुण्य भोगेंगे सारे, खुद से जुदा न करना प्यारे।

पार लगा नौका दीवाने, रो-रो कर बस तुझे पुकारे।

जीवन की अंतिम घड़ियों तक, हिया बसे मेरे तुम रहना।

हम मतिमन्द नहीं जाने कुछ, सद्कर्मों में हमें चलाना।

ज्ञानी धयानी सबको देखे, मुझे देख ले चैना आवे।

तुम हो सारे जग के स्वामी, कहत बने न हमें रुलावे।

तेरी माया से मैं बेसुधा, हरपल तुमको करुँ समर्पित।

मफ मुझे प्रभु तुम कर देना, होऊँ ना पीड़ा से विचलित।

तेरी चौखठ पर पड़े है, हमको ठुकरा न देना।

अंखियों से जो नीर बहते, इनको स्वीकार करना।

धयान तुही है ज्ञान तू प्रभु, जिंदगी का लक्ष्य हो तुम।

हमको है तुझमें समाना, भटके अरमान हो तुम।

नयनों के मोती चढावें, चाह न तू रूठ जावे।

इनकी ना गिनती जगत में, न किसी के काम आवें।

SAANS SAANS MAIN

झोली खाली हम भिखारी, दर तेरे पर खड़े है।

दया को मागें तुम्हारी, प्रभु हम रीते घड़े है।

बाजती वंशी तुम्हारी, चल रही दुनिया सारी।

देख रहे तुझ ओर प्रभु हम, भूल न हमको मुरारी।

जाते पल बैचेन यह दिल, कैसे हो पार नैया।

कृपा करो मुझ पर मुरारी, तुम हो मेरे खिवैया।

BY CHANDRA PRABHAKAR